विशद श्री धर्मनाथ विधान

धर्मनाथ विधान का मण्डल

मध्य में - ॐ प्रथम वलय - 6 द्वितीय वलय - 12 तृतीय वलय - 24 चतुर्थ वलय - 46 पंचम वलय - 48 कुल अर्घ्य- 170

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद श्री धर्मनाथ विधान

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - दितीय-2015

प्रतियाँ - 1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - **क्षुल्लक श्री 105 विसौमसागरजी, क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) , आस्था दीदी** 9660996425, **सपना दीदी**

संयोजन - **आरती दीदी, उमा दीदी ● मो.** 9829127533

प्राप्ति स्थल – 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर फोन : 0141–2319907 (घर) मो.: 9414812008

- 2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566
- विशद साहित्य केन्द्र
 C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाडी (हरियाणा) प्रधान-09416882301
- 4. विशद साहित्य केन्द्र हरीश जैन जय अरिहंत ट्रेडर्स, 6561 नेहरु गली, नियर लाल बत्ती चौक गाँधी नगर, दिल्ली मो. 981815971, 9136248971

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु २१/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्रीमती लादी देवी के पुत्र श्री रमेशचन्द-श्रीमती मनोरमा, श्री धर्मचन्द-श्रीमती रंजना श्री ऋषभ-श्रीमती अवनि जैन परिवार (पीलिया वाले)

मुद्रक : शर्ज बार्षिक अंट (सदीप शह), जसपुर में , 9829014976, 2723287 भुद्रक : शर्ज बार्षिक अंट (सदीप शह), जसपुर के फान : 2313339/ मी.: 9829050791

तीर्थंकर स्तवन

दोहा— धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान । विशद ज्ञान को प्राप्त कर, मिले शीघ्र निर्वाण ॥

(शम्भू छन्द)

परम पवित्र श्रेष्ठ शोभामय, भवि जीवों को मंगल रूप । नित्य निरन्तर उत्सव संयुत, परम अद्वितिय तीर्थ स्वरूप ॥ अनुपम तीन लोक के भूषण, धर्मनाथ की शरण मिले । चरण कमल में श्री जिनेन्द्र के. वन्दन कर मम हृदय खिले ॥१॥ मात सुव्रता भानुराय गृह, जन्मे धर्मनाथ भगवान । रत्नपुरी को धन्य किए प्रभु, गिरि सम्मेदशिखर निर्वाण ॥ तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ । पद पंकज में 'विशद' भाव से, झुका रहे हम अपना माथ ॥२॥ पंच योजन का समवशरण है. धर्मनाथ का अतिशयकार । तप्त स्वर्ण सम आभा तन की, वज्रदण्ड लक्षण मनहार ॥ दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान । अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान ॥३॥ आयु है दश लाख वर्ष की, छियालिस मूलगुणों के नाथ । एक सौ अस्सी हाथ प्रभू का, अवगाहन भी जानो साथ ॥ ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार । अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढा हम, वन्दन करते बारम्बार ॥४॥ 'अरिष्ट सेनादिक' तैंतालिस, धर्मनाथ के कहे गणेश । अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष ॥ दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार । अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार ॥५॥ इत्याशीर्वाद:पृष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री धर्मनाथ जिनपूजन

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ ! हे धर्मतीर्थ !, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ । तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ ॥ तुमने मुक्ती पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन । मम हृदय कमल के बीच किएांका, में आकर तिष्ठो भगवन् ॥ भक्तों ने भाव सिहत भगवन्, भक्ती के हेतु पुकारा है । न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है ॥ ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सिनहितौ भव-भव वषट् सिनधिकरणम् ।

(सखी छन्द)

हम निर्मल जल भर लाएँ, चरणों में धार कराएँ । जन्मादिक रोग नशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ॥ जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी । तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥१॥ ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, पद में अर्चन को लाए । संसार ताप विनशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ॥ जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी । तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥२॥ ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा। हम अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए । प्रभु अक्षय पदवी पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ॥

जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी । तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥३॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा। उपवन के पुष्प मँगाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए । प्रभु काम बाण नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए ॥ जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभ अन्तर्यामी । तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥४॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा। ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आये । प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, भव सागर तरने आए ॥ जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी । तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥५॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा। हम मोह नशाने आए, अनुपम यह दीप जलाए । प्रभू मोह नाश हो जाए, भव से मुक्ती मिल जाये ॥ जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी । तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥६॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा। ताजी यह ध्रूप बनाऐं, अग्नी से ध्रूम उड़ाएँ । प्रभु कर्म नाश हो जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ॥ जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी । तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥७॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा। प्रभु विविध सरस फल लाए, ताजे हमने मँगवाए । हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ॥

जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी ।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥८॥
ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय प्राप्ताय मोक्षफल फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए ।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी ।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥९॥
ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— धर्मनाथ जिन के चरण, देते शांती धार । अष्टकर्म का नाश कर, होवे भवदिध पार ॥ (शान्तये शांतिधारा)

> नाथ आप जग में रहे, सुख शांती दातार । अत: आपके पद युगल, वंदन बारम्बार ॥ (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पंच कल्याणक के अर्घ्य (दोहा)

तेरस शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान । जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान ॥ अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ । भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ ॥१॥

ॐ हीं वैशाखशुक्ला त्रयोदश्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> माघ सुदी तेरस तिथि, जन्मे धर्म जिनेन्द्र । करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र महेन्द्र ॥

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ । भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

तेरस सुदि माघ महान्, प्रभो दीक्षा धारे । श्री धर्मनाथ भगवान, बने मुनिवर प्यारे ॥ हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं । महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं ॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं। धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं। जिन प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं। अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।४।।

ॐ हीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी । गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी ॥ अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी । हमको मुक्तिपथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी ॥५॥ ॐ हीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वगामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पूजा कर जिनराज की, जीवन हुआ निहाल। धर्मनाथ भगवान की, गातें अब जयमाल॥

(तर्ज-भिक्त बेकरार है)

धर्मनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं। दिव्य देशना देकर प्रभु जी, करते जग कल्याण हैं। सर्वार्थ-सिद्धी से चय करके, रत्नपुरी में आये जी। मात सुव्रता भानू नृप के, गृह में मंगल छाये जी।। धर्मनाथ भगवान...

रत्नपुरी में देवों ने कई, रत्न श्रेष्ठ वर्षाए जी । दिव्य सर्व सामग्री लाकर, नगरी खूब सजाए जी ॥ धर्मनाथ भगवान...

चौथ शुक्ल की ज्येष्ठ माह में, सारे कर्म नशाए जी । यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर पदवी पाए जी ॥ धर्मनाथ भगवान...

हम भी शिव पद पाने की शुभ, विशद भावना भाते जी। तीन योग से प्रभु चरणों में, सादर शीश झुकाते जी।। धर्मनाथ भगवान...

त्रयोदशी शुभ माघ शुक्ल की, जन्मोत्सव प्रभु पायाजी । पाण्डुक वन में इन्द्रों द्वारा, शुभ अभिषेक कराया जी ॥ धर्मनाथ भगवान...

वज्र दण्ड लख दांये पग में, नामकरण शुभ इन्द्र किया। धर्म ध्वजा के धारी अनुपम, धर्मनाथ शुभ नाम दिया॥ धर्मनाथ भगवान... अष्ट वर्ष की उम्र प्राप्त कर, देशव्रतों को धारा जी । युवा अवस्था में राजा पद, प्रभु ने श्रेष्ठ सम्हारा जी ॥ धर्मनाथ भगवान...

त्रयोदशी को माघ शुक्ल की, संयम पथ अपनाया जी। पंच मुष्ठि से केश लुंचकर, रत्नत्रय शुभ पाया जी।। धर्मनाथ भगवान...

उभय परिग्रह त्याग प्रभु ने, आतम ध्यान लगाया जी । धर्म ध्यान कर शुक्ल ध्यान का, अनुपम शुभ फल पाया जी ॥ धर्मनाथ भगवान...

चार घातिया कर्मनाश कर, केवल ज्ञान जगाया जी । रत्नमयी शुभ समवशरण तब, इन्द्रों ने बनवाया जी ॥ धर्मनाथ भगवान...

गंध कुटी में कमलासन पर, प्रभु ने आसन पाया जी । दिव्य देशना देकर प्रभु ने, सब का मन हर्षाया जी ॥ धर्मनाथ भगवान...

दोहा – धर्मनाथ जी धर्म का, हमें दिखाओ पंथ । रत्नत्रय को प्राप्त कर, होय कर्म का अंत ॥ ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा।

दोहा - रत्नत्रय की नाव से, पार करें संसार । 'विशद' भावना बस यही, पावें भव से पार ॥

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलय

दोहा – पर्याप्ति के भेद छह, पाकर के भगवान । संयम का पालन करें, पावें पद निर्वाण ।

(प्रथम वलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ । तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ ॥ तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन । मम हृदय कमल के बीच किणिका, में आकर तिष्ठो भगवन् ॥ भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ती के हेतु पुकारा है । न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सिनहितौ भव-भव वषट् सिनिधिकरणम्।

पर्याप्ति धारक जिन के अर्घ्य

(चौबोला छन्द)

पर्याप्ती 'आहार' योग्य शुभ, हो शक्ती का पूर्ण विकास । ग्रहण वर्गणाए करता है, जीव स्वयं ही करे प्रयास ॥ छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान । आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण ॥१॥ ॐ हीं आहार पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। जो 'शरीर' के योग्य शक्ति की, करें पूर्णता जीव प्रधान । वे शरीर पर्याप्तीधारी, तन की रचना करें महान ॥ छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान । आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण ॥२॥ ॐ हीं शरीर पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'इन्द्रिय' पर्याप्ति हेत् शुभ, शक्ति पूर्णता करें विशेष । वे इन्द्रिय पर्याप्ती पाकर, इन्द्रिय सुख पावें अवशेष ॥ छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान । आत्म साधना करने वाले. पा जाते हैं पद निर्वाण ॥३॥ ॐ हीं इन्द्रिय पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'श्वासोच्छवास' पर्याप्ती की जो, करें पूर्णता जीव महान । वह पर्याप्त जीव होकर के. जीवन में करते कल्याण ॥ छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान । आत्म साधना करने वाले. पा जाते हैं पद निर्वाण ॥४॥ 🕉 ह्रीं श्वासोच्छवास पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। जो 'भाषा' के योग्य शक्ति की, करें पूर्णता जीव सदैव । वह भाषा पर्याप्ती पाकर. वचन बोलते प्राणी एव ॥ छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान । आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण ॥५॥ ॐ हीं भाषा पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'मन' पर्याप्ती योग्य शक्ति की, करें पूर्णता जीव प्रधान । पंचेन्द्रिय संज्ञी प्राणी हो, करते हैं निज का कल्याण ॥ छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान । आत्म साधना करने वाले. पा जाते हैं पद निर्वाण ॥६॥ ॐ हीं मन पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। आहारादि छह पर्याप्ति के, योग्य पूर्णता करें महान । उत्तम संयम पालन करके. उन जीवों का हो कल्याण ॥ छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान । आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण ॥७॥ ॐ ह्रीं छह पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - द्वादश अविरित त्याग कर, हो जाएँ व्रतवान । संयम के धारी कहे, इस जग में गुणवान ॥ (द्वितिय वलयोपिर पुष्पांजिलं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ । तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ ॥ तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन । मम हृदय कमल के बीच किणिका, में आकर तिष्ठो भगवन् ॥ भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ती के हेतु पुकारा है । न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सिन्निहितौ भव-भव वषट् सिन्निधिकरणम्।

बारह अविरति रहित जिन

(शम्भू छन्द)

है शरीर 'पृथ्वी' जिनका, वह पृथ्वी जीव कहाते हैं। होके विकल रहें एकेन्द्रिय, जीवन भर दुख पाते हैं।। जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी। शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी।।१॥ ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक अविरित विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'जल' ही है शरीर जिनका वह, जल कायिक कहलाते जीव । मारण तापन छेदन भेदन, आदी के दुख सहें अतीव ॥

जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी ॥२॥ ॐ ह्रीं जलकायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'अग्नी' में रहने वाले सब, जीव उष्णता जो पाते । जलकर स्वयं जलाने वाले. कष्ट स्वयं सहते जाते ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी ॥३॥ ॐ ह्रीं अग्निकायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'वायू' जिनका है शरीर वह, वायू कायिक जीव कहे। गर्जन तर्जन आदि के दुख, से व्याकुल वह नित्य रहे ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी ॥४॥ ॐ ह्रीं वायुकायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'वनस्पती' में रहने वाले, एकेन्द्रिय हैं जीव अपार । वनस्पती कायिक कहलाते, जिनके दुख का नहीं है पार ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी ॥५॥ ॐ ह्रीं वनस्पति कायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'दो इन्द्रिय' से पंचेन्द्रिय तक, जंगम होते हैं त्रस जीव । कर्मोदय से छेदन भेदन, के दुख पाते स्वयं अतीव ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी ॥६॥ 🕉 हीं त्रस जीवाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'स्पर्शन इन्द्रिय' के भाई, आठ भेद बतलाए हैं । जिसकी आशक्ती के कारण, जीव जगत भटकाए हैं ॥

जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी । शिवपर के राही बनते हैं. अविरत तज मंगलकारी ॥७॥ ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रियाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। पाँच भेद 'रसना इन्द्रिय' के, जीव रहें उसमें आसक्त । लीन रहें खाने पीने में. रात होय या दिन हर वक्त ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपर के राही बनते हैं अविरत तज मंगलकारी ॥८॥ ॐ ह्रीं रसना इन्द्रियाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'घ्राणेन्द्रिय' के विषय कहे दो, एक सुगन्ध और दुर्गन्ध । मधुकर सम आसक्त हुए नर, विषयों में होकर के अंध ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपर के राही बनते हैं अविरत तज मंगलकारी ॥९॥ ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'चक्षु इन्द्रिय' की आशक्ती, रखते हैं जो जग के जीव । मोहित हो इन्द्रिय विषयों में, कर्मबन्ध जो करें अतीव ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपुर के राही बनते हैं अविरत तज मंगलकारी ॥१०॥ ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय कायिकाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'कर्णेन्द्रिय' के भेद सात हैं, उनमें आशक्ती को धार । दु:ख उठाते हैं भव-भव में, प्राणी जग के बारम्बार ॥ जीवों पर करुणा ना करते. होते अव्रत के धारी । शिवपुर के राही बनते हैं, अविरत तज मंगलकारी ॥११॥ ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। कभी हिताहित का विवेक जो, जाग्रत न कर पाते हैं। इन्द्रिय 'मन' की आशक्ती से, दु:ख अनेक उठाते हैं ॥

जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी । शिवपुर के राही बनते हैं, अविरत तज मंगलकारी ॥१२॥ ॐ हीं अनिन्द्रयाविरित विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। इन्द्रिय प्राणी संयम पाकर, उत्तम व्रत जो धार रहे । रत्नत्रय की निधि के स्वामी, शिव के राही जीव कहे ॥ जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी । शिवपुर के राही बनते हैं, अविरत तज मंगलकारी ॥१३॥ ॐ हीं इन्द्रिय संयमाविरित विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय वलयः

सोरठा भेद कहे चौबीस, परिग्रह के दुखकाराये । चरण झुकाते शीश, धर्मनाथ जिन के चरण ॥ (तृतिय वलयोपरि पुष्पांजिल क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ । तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ ॥ तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन । मम हृदय कमल के बीच किणिका, में आकर तिष्ठो भगवन् ॥ भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भिक्ती के हेतु पुकारा है । न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है ॥ ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ हीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सिन्निहितौ भव-भव वषट् सिन्निधिकरणम्।

जो 'मिथ्या' भाव जगावें, वे सत् श्रद्धा न पावें ।
जो हैं मिथ्यात्व के धारी, वह दुख पाते हैं भारी ॥१॥
ॐ हीं मिथ्या परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी ।
हैं 'क्रोध कषाय' के धारी, वह दुख पाते हैं भारी ॥२॥
ॐ हीं कोध कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जो 'मान' करें जग प्राणी, वह स्वयं उठाते हानी ।
हैं मान कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी ॥३॥
ॐ हीं मान परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जो करते 'मायाचारी', दुख सहते वह नर नारी ।
हैं माया कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी ॥४॥
ॐ हीं माया परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जग के सब 'लोभी' प्राणी, मानो पापों की खानी ।
हैं लोभ कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी ॥५॥
ॐ हीं लोभ परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(तांटक छन्द)

'हास्य' कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं। शंकित होते हैं औरों से, निज संसार बढ़ाते हैं।। इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।६॥ ॐ हीं हास्य नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'रित' उदय में जिनके आवे, वे सब राग बढ़ाते हैं। राग आग में जलकर प्राणी, दुर्गित पंथ सजाते हैं।

इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं ॥७॥ ॐ ह्रीं रित नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'अरित' भाव मन में आने से, अप्रीति का भाव जगे। बैर भाव के कारण मानव. कर्माश्रव में शीघ्र लगे ॥ इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं ॥८॥ ॐ ह्रीं अरित नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। कुछ भी इष्टानिष्ट देखकर, मन में 'शोक' जगाते हैं। नित कषाय में जलने वाले. कर्म बन्ध ही पाते हैं ॥ इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥९॥ ॐ ह्रीं शोक नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। देख कोई भयकारी वस्तु, मन में भय उपजाते हैं। भय के कारण व्याकल होकर, शांत नहीं रह पाते हैं ॥ इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झकाते हैं ॥१०॥ ॐ ह्रीं भय नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। स्व-पर के गुण दोष देखकर, जो ग्लानी उपजाते हैं। रहे कषाय 'जुगुप्सा' धारी, दुर्गति में ही जाते हैं ॥ इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं ॥११॥ ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। पुरुष जन्य जो भाव प्राप्त कर, रमने को खोजें नारी । 'पुरुष वेद' के धारी हैं वह, व्याकुल रहते हैं भारी ॥

इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।१२॥ ॐ हीं पुरुष वेद कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। स्त्री जन्य भाव पाकर के, पुरुषों में जो रमण करें। 'स्त्री वेद' प्राप्त करके वह, दुर्गित में ही गमन करें।। इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।१३॥ ॐ हीं स्त्री वेद कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। मन में नर नारी की आशा, रखते हैं वह 'षण्ड' कहे। करते हैं उत्पात विषय गत, भारी जो उद्दण्ड रहे॥ इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं। उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।८॥

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। (छन्द भूजंगप्रयात)

खेती के मन में जो भाव जगाए, 'क्षेत्र परिग्रह' के धारी कहाए । बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई ॥१५॥ ॐ हीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। कोठी महल बंगला जो बनावें, 'वास्तु परिग्रह' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥१६॥ ॐ हीं वास्तु परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। चाँदी की मन में जो आशा जगावें, 'परिग्रह हिरण्य' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥१७॥ ॐ हीं हिरण्य कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। सोने के आभूषण आदी मंगावें, 'परिग्रह जो स्वर्ण' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥१८॥ ॐ हीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। ॐ हीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पशुओं के पालन में मन को लगावें, वह 'धन परिग्रह' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मक्ती श्री श्रेष्ठ पाई ॥१९॥ ॐ हीं धन परिगृह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। लेकर के धान्य जो कोठे भरावें. वह 'धान्य परिग्रह' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मक्ती श्री श्रेष्ठ पाई ॥२०॥ ॐ ह्रीं धान्य परिगृह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। सेवा के हेतु जो नौकर बुलावें, वह 'दास परिग्रह' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मिक्त श्री श्रेष्ठ पाई ॥२१॥ ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। स्त्री से अपनी जो सेवा करावें. वे 'दासी परिग्रह' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई ॥२२॥ ॐ हीं दासी परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। कपड़े जो नये-नये कड़ लेकर के आवें, वे 'कृप्य परिग्रह' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥२३॥ ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। भाड़े या बर्तन से कोठे भरावें, वह 'भाण्ड परिग्रह' के धारी कहावें। बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई ॥२४॥ 🕉 ह्रीं भाण्ड परिगृह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। परिग्रह चौबिस का प्रभु, तजके मन से आस दोहा-शिवपथ के राही बने, कीन्हे शिवपुर वास॥ ॐ ह्रीं चतुर्विंशति परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्थ वलय: हा- छियालिस पाए मूलगुण, ध

दोहा – छियालिस पाए मूलगुण, धर्मनाथ भगवान। पुष्पांजिल करके यहाँ, करते हम गुणगान॥ (चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजिलं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ । तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ ॥ तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन । मम हृदय कमल के बीच किणिका, में आकर तिष्ठो भगवन् ॥ भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ती के हेतु पुकारा है । न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सिन्निहितौ भव-भव वषट् सिन्निधिकरणम्।

जन्म के अतिशय

(नरेन्द्र छन्द)

'स्वेद रहित' तन जानो अनुपम, जन-जन का मन मोहे ।
प्रभु के जन्म समय से अतिशय, शुभ तन में यह सोहे ।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।
भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥१॥
ॐ हीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
गर्भ से जन्मे हैं माता के, िर भी निर्मल गाये ।
'मल मूत्रादिक रहित' देह प्रभु, अतिशय पावन पाये ॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें ।
भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥२॥
ॐ हीं निहार मूत्रादि रहित सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
तन का 'रुधिर श्वेत' है अनुपम, अतिशय पावन गाया ।
रुधिर लाल नहि यह शुभ अतिशय, जन्म समय का पाया ॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें । भिक्त भाव से जो भी पुजें, वह अनुपम सुख पावें ॥३॥ ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। तन सुडोल आकार मनोहर, 'सम चतुष्क' बतलाया । जिस अवयव का माप है जितना, उतना ही मन भाया ॥ सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें। भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥४॥ ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'वज्र वृषभ नाराच' संहनन, जिनवर तन में पाते । गणधरादि नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगाते ॥ सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें। भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥५॥ ॐ ह्रीं वज्रवषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। कामदेव का रूप लजावे, जिन प्रभु तन के आगे। 'अतिशय रूप' मनोहर प्रभु का, देखत में शुभ लागे ॥ स्र नर अस्र इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभ् के गुण गावें । भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥६॥ ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। परम 'सुगंधित तन' है प्रभु का, अनुपम महिमाकारी । अन्य सुरिभ नहिं है इस जग में, प्रभु तन सम मनहारी ॥ सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें । भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें ॥७॥ ॐ ह्रीं परम सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'एक हजार आठ शुभ लक्षण', प्रभु के तन में सोहे । अद्भृत महिमाशाली जिनवर, त्रिभ्वन का मन मोहे ॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।८॥
ॐ हीं सहम्राष्ट्र शुभ लक्षण सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।
तुलना रहित 'अतुल बल' प्रभु के, अतिशय तन में गाया।
इन्द्र चक्रवर्ती से अद्भुत, शक्ती मय बतलाया॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।९॥
ॐ हीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'हित मितप्रिय वचन' अमृत सम, प्रभु के होते भाई।
त्रिभुवन के प्राणी सुनते हों, मंत्र मुग्ध सुखदायी॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भिक्त भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।१०॥
ॐ हीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
ॐ हीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

केवलज्ञान के अतिशय

(रोला छन्द)

'चार-चार सौ कोष', चारों दिश में गाया । होय सुभिक्ष सुकाल, यह अतिशय प्रभु पाया ॥ यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे । तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥११॥ ॐ हीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाते केवल ज्ञान, 'नभ में गमन' करे हैं। देव रचावें पुष्प, तिन पर चरण धरे हैं।। यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे। तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।१२॥ ॐ हीं आकाश गमन घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। जहाँ गमन प्रभु होय, प्राणी 'वध न' होवे । दया सिन्धु जिन देव, जग की जड़ता खोवे ॥ यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे । तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥१३॥

ॐ हीं अदयाभाव घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
 'कवलाहार विहीन' रहते, हैं जिन स्वामी ।
 कुछ कम कोटिक पूर्व, रहें जिन अन्तर्यामी ॥
 यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे ।
 तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥१४॥

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। हो 'उपसर्गाभाव', अतिशय यह शुभकारी । सुर नर पशू अजीव कृत उपसर्ग निवारी ॥ यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे । तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥१५॥

ॐ हीं उपसर्गाभाव घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। समवशरण में देव, 'चउ दिश दर्शन' देवें । मुख पूरब में होय सबका, दुख हर लेवें ॥ यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे । तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥१६॥

ॐ हीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'सब विद्या के एक, ईश्वर' आप कहाए ।
तुम्हें पूजते भव्य, ज्ञान कला प्रगटाए ॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे ।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥१७॥

ॐ हीं सर्व विद्येश्वर घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमौदारिक देह पुद्गलमय, प्रभु पाए । फिर भी 'छाया हीन' अतिशय, यह प्रगटाए ॥ यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे । तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥१८॥

ॐ ह्रीं छाया रहित अतिशय घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'पलक झपकती नाहिं,' न ही हो टिमकारी ।
सौम्य दृष्टि नाशाग्र, लगती अतिशय प्यारी ॥
'यह अतिशय हे नाथ!' जन-जन के मन आवे ।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥१९॥

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंद रहित घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। नहीं बढ़ें नख केश, केवल ज्ञानी होते । दिव्य शरीर विशेष, मन का कल्मष खोते ॥ यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे । तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे ॥२०॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

१४ देववृत अतिशय

(छन्द जोगीरासा)

भाषा है 'सर्वार्धमागधी', जिन अतिशय शुभकारी । भव-भव के दुख हरने वाली, भव्यों को सुखकारी ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२१॥ ॐ हीं अर्धमागधी भाषाधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। बैर भाव सब तज देते हैं, जाति विरोधी प्राणी । 'मैत्री भाव' बढ़े आपस में, जिन मुद्रा कल्याणी ॥

अर्घ्य चढ़ाकर भिंकत भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२२॥ ॐ हीं सर्व मैत्री भावधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 'सब ऋतु के फल फूल' खिलें शुभ, एक साथ मनहारी । कई योजन तक होवे ऐसा, अतिशय अद्भुत भारी ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिंकत भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२३॥ ॐ हीं सर्वऋतुफलादि तरू देपोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नमयी पृथ्वी 'दर्पण तल सम', होवे अतिशयकारी । प्रभु के विहरण हेतू रचना, करें देवगण सारी ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२४॥ ॐ हीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमई देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य नि. स्वाहा।

वायुकुमार देव विक्रिया कर, 'शीतल पवन' चलावें । हो अनुकूल वायु विहार में, ये अतिशय प्रगटावें ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२५॥ ॐ हीं सुर्गाधित विहरण मनुगत वायुत्व श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। परमानन्द प्राप्त कर प्राणी, जिन प्रभु के गुण गाते । भय संकट क्लेशादि रोग सब, मन में नहीं सताते ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२६॥ ॐ हीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुखद वायु चलने से 'धूली, कंटक न' रह पावें । प्रभु विहार के समय देवगण, भूमी स्वच्छ बनावे ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२७॥ ॐ हीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य नि. स्वाहा।

मेघ कुमार करें नित वृष्टी, गंधोदक की भाई । इन्द्रराज की आज्ञा से हो, यह प्रभु की प्रभुताई ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२८॥ ॐ हीं मेघकुमार वृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्वर्ण कमल' की रचना सुरगण, श्री विहार में करते । चरण कमल में नत मस्तक हो, अपना मस्तक धरते ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥२९॥ ॐ हीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य मंगल मय पावन, सुरगण जहाँ सजाते । देवों कृत अतिशय यह सुन्दर, सबको सुखी बनाते ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥३०॥ ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। शरद ऋतू सम स्वच्छ सुनिर्मल, गगन होय मनहारी । उल्कापात धूम्र आदिक से, रहित होय शुभकारी ॥

अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ। अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥३१॥ ॐ हीं शरदकाल विन्तर्मल गगन देवोपनीतिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य नि. स्वाहा।

शरद मेघ सम सर्व दिशाएँ, होवें जन मनहारी ।
रोगादि पीड़ाएँ हरते, देव सभी की सारी ॥
अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥३२॥
ॐ हीं आकाश गमन देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
चतुर्निकाय के देव शीघ्र ही, प्रभु भिक्त को आओ ।
इन्द्राज्ञा से देव बुलाते, आकर प्रभु गुण गाओ ॥
अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥३३॥
ॐ हीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धर्म चक्र' ले यक्ष इन्द्र शुभ, आगे आगे जावें । चार दिशा में दिव्य चक्र ले, मानो प्रभु गुण गावें ॥ अर्घ्य चढ़ाकर भिक्त भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ । अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ ॥३४॥ ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्ट्य देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(चाल छन्द)

'दर्शन अनन्त' गुण पाए, प्रभु लोकालोक दिखाए । हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥३५॥ ॐ हीं अनन्त दर्शन सिंहत श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर 'केवल ज्ञान' प्रकाशे । हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥३६॥ ॐ हीं अनन्तज्ञान सहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। प्रभु मोह कर्म के नाशी, जिनवर 'अनन्त सुखराशी' । हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥३७॥ ॐ हीं अनन्तसुख सहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। न अन्तराय रह पावे, प्रभु 'वीर्यानन्त' जगावें । हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ ॥३८॥ ॐ हीं अनन्तवीर्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। ॐ हीं अनन्तवीर्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य (नरेन्द्र छन्द)

शत इन्द्रों से अर्चित अर्हत्, प्रातिहार्य वसु पाये ।
'तरु अशोक' शुभ प्रातिहार्य जिन, विशद आप प्रगटाये ॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम मिहमा गाते ।
अष्ट द्वय का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ॥३९॥
ॐ हीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सिहताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सघन 'पुष्प की वृष्टी' करके, नभ में सुर हर्षाते ।
अर्घ्य कर्म पुष्प बरसते, जिन मिहमा दिखलाते ॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम मिहमा गाते ।
अष्ट द्वय का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ॥४०॥
ॐ हीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सिहताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
देव शरण में हुए अलंकृत, 'चौसठ चँवर' ढुराते ।
श्वेत चवर ये नम्रभूत हो, विनय पाठ सिखलाते ॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम मिहमा गाते ।
अष्ट द्वय का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ॥४१॥
ॐ हीं चतु:षष्टि चंवर सत्प्रातिहार्य सिहताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

घाति कर्म का क्षय होते ही, भामण्डल जगावें । कोटि सूर्य की कांती जिसके, आगे भी शर्मावे ॥ शत इन्द्रों से पुज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते । अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढाकर, सादर शीश झकाते ॥४२॥ ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। आओ-आओ जग के प्राणी, प्रभू जगाने आये । श्रेष्ठ 'दुन्दुभि' के द्वारा शुभ, वाद्य बजा के गाये ॥ शत इन्द्रों से पुज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते । अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढाकर, सादर शीश झकाते ॥४३॥ ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सिहताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। तीन लोक के ईश प्रभू हैं, 'तीन छत्र' बतलाते । गुरु लघुतम लघुक्षेत्र ऊर्ध्व में, धवल कांति फैलाते ॥ शत इन्द्रों से पुज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते । अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढाकर, सादर शीश झकाते ॥४४॥ ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। अर्हत् के 'गम्भीर वचन' शुभ, प्रमुदित होकर पाते । मोह महातम हरने वाले, सभी समझ में आते ॥ शत इन्द्रों से पुज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते । अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ॥४५॥ ॐ ह्रीं दिव्य ध्विन सत्प्रातिहार्य सिहताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा। समवशरण के मध्य रत्नमय, 'सिंहासन' मनहारी। कमलासन पर अधर विराजे, अर्हत् जिन त्रिपुरारी॥ शत इन्द्रों से पुज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते। अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥४६॥ ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सिंहताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। दोहा — छियालिस पाए मूलगुण, धर्मनाथ भगवान । यह गुण पाने के लिए, करते हम गुणगान ॥४७॥ ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशद गुण सिहताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा अड़तालिस यह ऋद्धियाँ, पाते जिन अरहंत ।
पुष्पांजिल करते चरण, पाने भव का अंत ॥
(पंचम वलयोपरि पृष्पांजिलं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ । तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ ॥ तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन । मम हृदय कमल के बीच किएांका, में आकर तिष्ठो भगवन् ॥ भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ती के हेतु पुकारा है । न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है ॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवीषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सिन्निहितौ भव-भव वषट् सिन्निधिकरणम्।

४८ ऋद्धियों के अर्घ्य (चौपाई)

केवल बुद्धि ऋद्धि के धारी, चार घातिया नाशनहारी । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥१॥ ॐ हीं केवल बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। उत्तम तप जिन मुनिवर पाते, देशावधि मुनि ज्ञान जगाते । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥२॥ ॐ हीं देशावधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमावधि ज्ञान प्रगटावें. फिर निज केवलज्ञान जगावें । तप कर मिन ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झकाते ॥३॥ ॐ हीं परमावधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। सर्वावधी जान के धारी, केवल जानी हों शिवकारी । तप कर मिन ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झकाते ॥४॥ ॐ हीं सर्वावधी ऋदिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्दाय अर्घ्यं नि. स्वाहा। अनन्तावधि मुनिवर जी पाएँ, परम विशुद्धी हृदय जगाएँ । तप कर मिन ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झकाते ॥५॥ ॐ हीं अनन्तावधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। बीज बृद्धि ऋद्धीधर गाये, बीज भृत सब ज्ञान जगाए । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥६॥ ॐ हीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। पदानुसारिणी ऋब्द्रीधारी, जानें सब आगम अनगारी । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥७॥ ॐ ह्वीं पदानसारिणी ऋद्भिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। संभिन्न संश्रोत ऋद्धिधर भाई, जाने सब भाषा सुखदायी । तप कर मृनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥८॥ ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोत ऋद्भिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा । स्वयंबद्ध ऋद्धी जो पाएँ, निज आतम का ज्ञान जगाएँ । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥९॥ ॐ हीं स्वयं बुद्ध ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। प्रत्येक बुद्ध ऋद्धीधर ज्ञानी, पाएँ संयमादि कल्याणी । तप कर मिन ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झकाते ॥१०॥ ॐ हीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। बोधित बुद्ध ऋद्धि शुभ पाते, आगम में निज बोधि जगाते । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥११॥

ॐ ह्रीं बोधित बुद्ध ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। ऋजुमती ज्ञानी शुभकारी, सरल भाव जानें अनगारी । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥१२॥ ॐ हीं ऋजुमित ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। विपुलमती ऋद्धी शुभ पाते, आगम से निज बोधि जगाते । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥१३॥ ॐ हीं विपुल मित ऋद्भिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। कोष्ठ बुद्धि ऋद्धी जो पावें, भिन्न-भिन्न सब विषय बतावें। तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥१४॥ ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। दश पूर्वित्व ऋद्धिधर गाये, विद्याओं की चाह भुलाए । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥१५॥ ॐ हीं दश पूर्वित्व ऋद्भिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। चौदह पुरवधर श्रुत पावें, ऋद्धी से प्रत्यक्ष जगावें । तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते ॥१६॥ ॐ ह्रीं चौदह पूर्व ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(बारहमासा चाल)

ज्योतिष आदिक लक्षण जाने, निमित्त ऋद्धी के द्वारा जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥१७॥ ॐ हीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। बहु विधि अणिमादिक ऋद्धी शुभ, पाए विक्रिया धारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥१८॥ ॐ हीं अणिमादिक ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। भूमी जल जन्तु आदिक का, घात न हो मुनि द्वारा जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥१९॥ ॐ हीं भूचारण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पग छुते ही चलें गगन में, चारण ऋद्धीधारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२०॥ ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। खग सम चलें गगन में मुनिवर, गगन चारिणी धारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२१॥ ॐ हीं गगनचारिणी ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। वाद कुशल को करें पराजित, परामर्श ऋद्धीधर जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२२॥ ॐ हीं परामर्ष ऋद्धि धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। विष को अमृत करें ऋद्धी से, आशीनिर्विष धारी जी। उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२३॥ ॐ हीं आशी निर्विष ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। विष का करें विनाश देखते, दुष्टी निर्विषधारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२४॥ ॐ हीं दृष्टी निर्विष ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। उग्र सुतप की करें साधना, मुनिवर ऋद्धी धारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२५॥ ॐ हीं उग्र सुतप ऋद्भिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। बढ़े देह की कांती अनुपम, दीप्त ऋद्धि के द्वारा जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२६॥ ॐ ह्रीं दीप्त सुतप ऋद्धि धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। चन्द्र कला सम बढ़े साधना, तप्त सुतप के द्वारा जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२७॥ ॐ ह्रीं तप्त सुतप ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। वृद्धिंगत नित करें साधना, ऋद्धि महातप द्वारा जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२८॥ ॐ ह्रीं महातप ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गिरि सिरता तट करें साधना, ऋद्धि घोर तप द्वारा जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥२९॥ ॐ हीं घोर तप ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। वन में निर्विकार हो तिष्ठें, ऋद्धि पराक्रम धारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥३०॥ ॐ हीं घोर पराक्रम ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। महागुणों को पाने वाले, ऋद्धि घोर गुण धारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥३१॥ ॐ हीं घोर गुण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। काम विजय को पाने वाले, ऋद्धि ब्रह्मचर्य धारी जी । उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥३२॥ ॐ हीं घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी ॥३२॥ ॐ हीं घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(भुजंगप्रयात)

औषधि जिन सिद्ध स्पर्श करते रोग सकल नशाए धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥३३॥ ॐ हीं आमर्षोषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। क्ष्वेलौषधी श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी बने क्ष्वेल औषधि है ऋद्धी सुखारी स्तप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥३४॥ ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्भिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। विडौषधी जिन्हें प्राप्त ऋद्धी है बने मूत्र औषधि शुभम् सौख्यदायी

सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी । विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥३५॥ ॐ ह्रीं विडोषधि ऋद्भिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। बने जल्ल औषधि मुनी तन का प्यारा । ऋद्धी का पाया है जिनने सहारा ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी । विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥३६॥ 🕉 हीं जल्ल औषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। करे मुनि को स्पर्श वायु बहाए तभी रोग वायू सभी के नशाए ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी । विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥३७॥ ॐ हीं सर्वोषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। मन बल बढाते हैं मुनि ऋद्धिधारी । करें श्रुत का चिन्तन मुहुरत में भारी ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥३८॥

35 हीं मन बल ऋदिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। वचन बल करें प्राप्त ऋब्द्री के धारी । करें श्रुत का वर्णन मुहुरत में भारी ॥ स्तप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥३९॥

🕉 हीं वचन बल ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। मनि काय बल ऋद्धि धारी जो होते। वे श्रम खेद तन की थकावट के खोते ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी । विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४०॥

ॐ हीं काय बल ऋदिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्दाय अर्घ्यं नि. स्वाहा। मिन क्षीर स्नावि शुभ ऋद्धी जो पावें । विरस भोज को क्षीर सम जो बनावें ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४१॥

ॐ हीं क्षीर सावी ऋदिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। बने रुक्ष आहार रसदार भाई मनी सर्पि स्नावी के कर सौख्यदायी ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४२॥

ॐ हीं सिर्प स्रावी ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। मधस्रावि के हाथ में रुक्ष आहार । मध् सम मध्र हो श्भ, ऋद्धि के आधार ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी । विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४३॥

ॐ ह्रीं मधस्रावि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। मुनि अमृतस्रावि हैं ऋब्द्री के धारी बने रुक्ष आहार, अमृत सा भारी सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४४॥

ॐ हीं अमृतस्रावि ऋद्भि धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। जीमते ऋद्धि अक्षीण धारी श्रेष्ठ आहार अक्षय हो भारी धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४५॥

ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सिद्ध राशि हो वर्धमान भारी । बने सिद्ध वह भी जो हैं ऋद्धि धारी ॥ सतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी । विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४६॥ ॐ हीं केवलजान ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। दर्श सिद्धायतन के निराले म्निश्रेष्ठ हैं जो महत् ज्ञान वाले स्तप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४७॥ ॐ हीं सिद्धायतन ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। भयवदोमहदि महावीर णमो नामी वर्धमान मोक्षगामी कहाए प्रभ् धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी ॥४८॥ ॐ ह्रीं वर्धमान ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा। दोहा – अडतालिस यह ऋद्धियाँ, पाते हैं भगवान । कर्म नाश करके विशद, प्राप्त करें निर्वाण ॥४९॥ ॐ ह्रीं अष्टचत्त्वारिंशद ऋद्धीधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा। जाप्य-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा – धर्मादिक त्रय वर्ग तज, पावें मोक्ष महान । जयमाला गाते यहाँ, करने जिन गुणगान ॥ (सखी छन्द)

जय धर्मनाथ हितकारी, इस जग में मंगलकारी । पितु भानुराज कहलाए, प्रभु मात सुव्रता पाए ॥ प्रभु चार ध्यान बतलाए, दो उसमें हेय कहाए । वह आर्त रौद्र हैं भाई, होते जग में दुखदायी ॥ है धर्म शक्ल शभकारी, यह ध्यान रहे हितकारी । मुक्ती के कारण गाये, ये उपादेय कहलाए ॥ प्रभ् शुक्ल ध्यान जब ध्यायें, तब घाती कर्म नशाएँ । फिर केवल ज्ञान जगाएँ, सुर समवशरण बनवाएँ ॥ सौ इद्र शरण में आवें, शुभ प्रातिहार्य प्रगटावें । प्रभ् जीवों को हितकारी, उपदेश दिए शुभकारी ॥ प्रभ् चिदानन्द कहलाए, मुनिवृन्द प्रभ् गुण गाए । जो दर्श आपका पाए, वह निज सौभाग्य जगाए ॥ मम पुण्य उदय जो आया, प्रभु दर्श आपका पाया । हम काल अनादी स्वामी, भटके जग अन्तर्यामी ॥ तुम ही ब्रह्मा कहलाए, विष्णु महेश तुम गाए । तुमने शिव पद को पाया, जीवों को मार्ग दिखाया ॥ हम शरण आपकी आए, इस जग से प्रभु सताए । अब मुक्ती राह दिखाओ, हमको भव पार लगाओ ॥ जय ऋद्धि सिद्धि के दाता. इस जग के भाग्य विधाता । तव भक्ती से गुण गावें, वे जीव सुखी हो जावें ॥ प्रभु जग दुख मैटन हारे, जन जन के रहे सहारे। जो चरण शरण में आया, जग का सुख वैभव पाया ॥ अब आई मेरी बारी, भव पार करो त्रिपुरारी । हम 'विशद' भावना भाते, पद सादर शीश झुकाते ॥ (छन्द घत्तानन्द)

जय धर्म जिनेशं, हित उपदेशं, धर्म विशेषं दातारं । जय धर्माधारं, शिव कर्तारं, भव हरतारं सुखकारं ॥ ॐ हीं तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा। दोहा — जिन शासन के कोष जिन, दिव्य भानु सम रूप । धर्मनाथ को पूजकर, पाएँ धर्म स्वरूप ॥ इत्याशीर्वाद: पुष्पांजिलं क्षिपेत्

श्री धर्मनाथ भगवान की आरती

(तर्ज:- इह विधि मंगल...)

धर्मनाथ की आरित कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे। पिता भानु नृप जिनके गाए, मात सुन्नता जी कहलाए।। धर्मनाथ... रत्नपुरी के स्वामी जानो, वज्र चिह्न दाये पग मानो।। धर्मनाथ... आयु पूर्व दश लाख बताई, धनुष पैंतालिस है ऊँचाई।। धर्मनाथ.. सुदि वैशाख अष्टमी भाई, गर्भकल्याण की तिथि गाई।। धर्मनाथ.. माघ सुदी तेरस को स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।। धर्मनाथ.. पौष पूर्णिमा का दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।। धर्मनाथ.. ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ बताई, तीर्थराज से मुक्ती पाई।। धर्मनाथ.. 'विशद' भावना यही हमारी, जीवन हो यह मंगलकारी।। धर्मनाथ..

प्रशस्ति

ॐ नम: सिद्धेभ्य: श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्याः श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगर स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे द्वितिय भादौ मासे शुक्लपक्षे बारसितिथि दिन गुरुवासरे श्री धर्मनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री घंटाकर्ण स्तोत्र

ॐ घंटाकर्णे महावीरः सर्वव्याधि विनाशकः। विस्फोटकभयं प्राप्ते रक्ष-रक्ष महाबलः।।1।। यत्र त्वं तिष्ठते देव, लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः। रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातिपत्तकफोद्भवाः।।2।। तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णे जपात्यक्षम्। शािकनी भूतवेताला, राक्षसाः प्रभवन्ति न।।3।। नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दश्यते। अग्निचौरभयं नास्ति ॐ हीं श्रीं घंटाकर्ण। नमोस्तुते! ॐ नर वीर! ठः ठः ठः स्वाहा!!

सूचना-घण्टाकर्ण मन्त्र का 21 बार जप करने से राजभय, चोरभय, अन्नि और सर्प का भय दूर होवें सब प्रकार की भूत-प्रेत बाधा भी दूर होती है। सर्व विपत्ति-हत्तां मंत्र है।

श्री धर्मनाथ चालीसा

दोहा रहे पूज्य नव देवता, तीनों लोक महान्। धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान॥ चालीसा गाते यहाँ, भाव सहित शुभकार। वन्दन करते पद युगल, जिन पद बारम्बार॥

(चौपाई)

लोकालोक रहा शभकारी, मध्य लोक जिसमें मनहारी । मध्य में जम्बूद्वीप बताया, भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया ॥ जिसमें अंग देश है भाई, रत्नप्री नगरी सुखदायी । भानुराय जिसमें कहलाए, कुरू वंश के स्वामी गाए ॥ कश्यप गोत्री जो कहलाए, महारानी, सुव्रता जो पाए । वैसाख शक्ल त्रयोदशी जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो ॥ शभ नक्षत्र रेवती पाए, चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आए । तीर्थंकर प्रवृति शुभ पाए, प्रभु जी माँ के गर्भ में आए ॥ माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्प नक्षत्र रहा मनहारी । अतिशय जन्म प्रभुजी पाए, जन्म कल्याणक जो कहलाए ॥ कर्क राशि का योग बताया, राशी स्वामी चन्द्र कहाया। स्वर्ण वर्ण तन का है भाई, धनुष पैंतालिस है ऊँचाई ॥ वर्ष लाख दश आयु पाए, वज्रदण्ड पहिचान कराए । उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा पाए अन्तर्यामी ॥ माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्प नक्षत्र रहा मनहारी । दीक्षा नगर रत्नपुर गाया, सायंकाल का समय बताया ॥ देव पालकी लेकर आये, नागदत्ता शुभ नाम बताए । शालीवन उद्यान बताया, दीर्घपर्ण तरुवर कहलाया ॥ एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई। एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए ॥ एक वर्ष तप काल बताया, बाद में केवलज्ञान जगाया। पौष शुक्ल पुनम शुभ जानो, संध्याकाल समय शुभ मानो ॥ इन्द्र राज-चरणों में आया, धन कुबेर को साथ में लाया । साथ में देव अन्य कई आए, समवशरण रचना बनवाए ॥ पाँच योजन विस्तार बताया, पद्मासन प्रभु ने शुभ पाया । साथ में केवलज्ञान जगाए, साढ़े चार सहस बतलाए ॥ सात हजार विक्रियाधारी, नौ सौ पुरब धर अविकारी । चालिस सहस सात सौ भाई, शिक्षक की संख्या बतलाई ॥ चार हजार पाँच सौ जानो, मन:पर्यय ज्ञानी पहिचानो । अवधि ज्ञानधारी मुनि आए, तीन सहस छह सौ बतलाए ॥ दो हजार आठ सौ भाई, वादी मुनि संख्या बतलाई । प्रभु के साथ मुनीश्वर आए, चौंसठ सहस पूर्ण कहलाए ॥ गणधर तैंतालिस कहलाए, प्रथम गणि अरिष्टसेन कहाए । यक्ष किंप्रुष जानो भाई, अनन्तमती यक्षी कहलाई ॥ प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सुदत्तवर अनुपम गाए । योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहले शिवगामी ॥ कायोत्सर्गासन प्रभु पाए, स्वामी प्रातः मोक्ष सिधाए । चौथ ज्येष्ठ शुक्ला की जानो, मोक्ष कल्याणक की तिथिमानो ॥ जिन प्रतिमाएँ हैं शुभकारी, वीतराग मुद्रा अविकारी । दर्शन कर सद्दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाए ॥

दोहा— चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुने जो लोग । सुख शांती सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग ॥ धर्मनाथ के चरण को, ध्याये जो गुणवान । अल्प समय में ही 'विशद', पावे वह निर्वाण ॥

श्री १००८ धर्मनाथ भगवान की आरती (तर्ज-जीवन है पानी की बूँद)

धर्मनाथ के दर पे शुभ, दीप जलाए रे। जिनवर हो-जिनवर, सब आरती गाए रे।। टेक।।

मात सुव्रता के जाये, पिता भान नूप कहलाए । रत्नपुरी में जन्म लिया, उस धरती को धन्य किया ॥ वज्र चिन्ह जिनवर की-हो-हो-पहिचान बताए रे । जिनवर हो-जिनवर, सब आरती गाए रे ॥१॥ बैशाख सुदी त्रयोदशी जानो, गर्भ में प्रभु आये मानो । माघ सुदी तेरस आई, जन्म लिया प्रभु ने भाई ॥ दस लाख पुरव की आयु, हो-हो जिनवर जी पाए रे। जिनवर हो-जिनवर, सब आरती गाए रे॥२॥ धनुष पैंतालिस ऊँचाई, जिनवर के तन की गाई । माघ सुदी तेरस भाई, प्रभु जी ने दीक्षा पाई ॥ समवशरण आकर के, हो-हो शुभ देव बनाए रे । जिनवर हो-जिनवर, सब आरती गाए रे ॥३॥ पौष पूर्णिमा दिन आया, 'विशद' ज्ञान प्रभु ने पाया । अनन्त चतुष्टय प्रकटाए, देव इन्द्र सब सिरनाए ॥ सम्मेद शिखर पे जाके, हो-हो प्रभु ध्यान लगाएरे । जिनवर हो-जिनवर, सब आरती गाए रे ॥४॥ ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ अहा, मंगलमय दिन श्रेष्ठ कहा । जिनवर ने शिवपद पाया, मुक्ति वधू को अपनाया ॥ जिन भिक्त से हमको, हो-हो शिव पद मिल जाए रे। जिनवर हो-जिनवर, सब आरती गाए रे ॥५॥

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं। श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन। मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्ङ्क

ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ताटंक छंद)

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है। रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं। भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं। कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं। संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं। अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं। अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं। खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं। क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना। विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं। मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वणमीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था। पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं। आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्
निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।

महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।

पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वणमीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल। मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क (चौबोला छंद)

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण। श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी। श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क

बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड पड़े। ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेड्ड आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया। मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयुर अति हर्षायाङ्क पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा। तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।। तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते। निकल पड़े बस इसलिए, भिव जीवों की जड़ता हरतेड्झ मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती। तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है। है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना। हम पूजन स्तृति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता। हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें। श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें। हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंड्स

ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान। मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरित मंगल गावे। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता। नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।। सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया। बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।। जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मृनिवर के......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा। विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।। गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे। सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।। आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

विशद श्री धर्मनाथ विधान

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित 140 विधानों की विशाल श्रृंखला

व.						
3. में प्रभावनाय प्रहाणका विधान 5. चालमार्थेण निवारक महालफका विधान 17. में चळ्या विधान (त्राचाण) 4. में प्राप्ति प्रथम 18. की पणका विधान 18. की पणका विधा	1.	श्री आदिनाथ महामण्डल विधान	63.		125.	गणधर वलय विधान (वृहद्)
अं अपीय पंत्रचेन सहामण्यत विधान 5. श्री आपीय पंत्रचेन सहामण्यत विधान 13. श्री मण्यत विधान 14. श्री मण्यत	2.	श्री अजितनाथ महामण्डल विधान	64.		126.	गिरनार गिरि विधान
5. भी सुप्तिशय सहायण्यत विधाय 6. भी परुद्राभ सहायण्यत विधाय 7. भी पुरुद्राभ सहायण्यत विधाय 7. भी सुप्तिश्व सहायण्यत विधाय 7. भी भी स्थितवाय सहायण्यत विधाय 7. भी भी स्थितवाय सहायण्यत विधाय 7. भी भी स्थितवाय सहायण्यत विधाय 7. भी सुप्तिश्व सहायण्यत्व विधाय 7. भी सुप्तिश्व सहायण्यत विधाय 7. भी सुप्तिश्व सहायण्यत्व विधाय	3.	श्री संभवनाथ महामण्डल विधान	65.		127.	श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
कि भी शहरपुत्र महामण्डल विधान श्री भी श्री महामण्डल विधान श्री भी	4.	श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान	66.		128.	ऋषि मण्डल विधान
. भी चुण्डमेश प्रताणक विध्यान (१९) . पंचरियाम संग्रह	5.	श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान	67.	श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान	129.	कालसर्प दोष निवारक विधान
श. वे पुन्यक्ष प्रधानक विधान 99. पंचित्याम संक्रष्ट 131. चल्लु पियान (नव्य)	6.	श्री पदमप्रभ महामण्डल विधान	68.	त्रिविधान संग्रह-1	130.	शनि ग्रह अरिष्ट निवारक विधान
8. भी चन्नपुत्र महामण्डल विधान 7. भी मुन्तपुत्र महामण्डल विधान 7. ने पूर्व पर्यक्त कियान 7. ने पूर्व पर्यक्त कियान 7. ने विधान विधान 7. ने विधान कियान 7. ने व			69.	पंचविधान संग्रह	131.	वास्त विधान (लघ)
9. थो पुण्यंत महामण्यत विधान 13. थी वास्त्रम्य महामण्यत विधान 13. थी वास्त्रम्य महामण्यत विधान 13. थी वास्त्रम्य महामण्यत विधान 14. थी अलनताथ महामण्यत विधान 15. थी प्राचित्रम्य महामण्यत विधान 16. थी महान्यत महामण्यत विधान 17. कन्याम महान्यत विधान 18. थी अलनताथ महामण्यत विधान 18. थी अलनताथ महामण्यत विधान 18. थी महान्यत महामण्यत विधान 18. था महान्यत महामण्यत विधान 18. था महान्यत महाण्यत विधान 18. थी भण्यत महाण्यत विधान 18. थी महान्यत महा			70.	श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान		
10. श्री श्रीसन्तराय सहायण्डत विधान 72. अर्जुत गरिमा विधान 135. चेत्रामत तीयाल 136. चेत्रामत तीयाल			71.			
11 मे श्रेगांकवार प्रहाणक विधान 73. सारक्षी विधान 13. चौर्म सार्वेफ्य विधान 12. ये वायुरूज बहारणक विधान 75. विधान संत्रार (प्रथम) 137. करनुष विधान 136. ये देवाया विधान 137. करनुष विधान 137. करनुष विधान 138. तर्वेशी प्रति विधान 138. ये श्री विधान यहामण्डत विधान 138. ये श्री विधान यहामण्डत विधान 138. ये श्री उपताय महामण्डत विधान 138. ये श्री विधान यहामण्डत विधान 138. ये श्री विधान 139. ये			72.			_ ~ _
1. श्री व्यावस्थाय महामण्डल विधान 75. विधान संग्रह (प्रथम) 13. थे. व्याव विधायन 15. श्री विधानसाय महामण्डल विधान 75. विधान संग्रह (प्रथम) 13. लल्ल्यु विधाय (प्रण) 14. श्री अन्तननाय महामण्डल विधान 76. विधान संग्रह (प्रथम) 13. लल्ल्यु विधाय (प्रण) 15. श्री धर्मनाय महामण्डल विधान 77. ब्रुज्यमा संदिष्धाय (स्थाम विधान प्रहामण्डल विधान 17. श्री ग्रुज्यमाय महामण्डल विधान 19. विदे होत्र महामण्डल विधान 14. श्री ग्रुज्यमाय महामण्डल विधान 19. विदे होत्र महामण्डल विधान 14. विधान संग्रह (प्रति प्रण) 19. श्री ग्रुज्यमाय महामण्डल विधान 18. संग्रह आराधना विधान 14. विधान संग्रह आराधना विधान 14. विदे होत्र महामण्डल विधान 14. विदे होत्र होत्र महामण्डल विधान 14. विदे होत्र महामण्डल विधान 14. विदे होत्र महामण्डल विधान 14. विदे होत्र होत्र महामण्डल विधान 14. विदे होत्र होत्य होत्र होत्य होत्र होत्र होत्य होत्य होत्र होत्य होत्य होत्य होत्य होत्य होत्य होत्य होत्य होत्य होत						
13 अनिलताय प्रावण्डत विधान 75. विधान संग्रह (रूपण) 137. व्यन्त्रण विधान 14 अन्तन्ताय महामण्डत विधान 75. विधान संग्रह (हिर्मण) 138. तस्त्री ग्राणि विधान 14. विधान प्रावण्डत विधान 78. विधान प्रावण्डत विधान 78. विधान प्रावण्डत विधान 14.						
स्विध्य संक्षाय ह्यानण्डल विधान 76. विधान संकार (द्वितीय) 138. लक्ष्मी स्विविधान 139. व्यक्षीय संविध्यल विधान 77. करण्याण संदि विधान (च्या संविधान (च्या संविधान) 139. व्यक्षीय संविधान (च्या संविधान) 130. व्यक्षीय संविधान (च्या संविधान) 130. व्यक्षीय संविधान (च्या संविधान) 130. व्यक्षीय संविधान (च्या संविधान) 131. विवाद व्यक्षीय संविधान (च्या संविधान) 131. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 132. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 132. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 132. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 133. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 134. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 135. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 135. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 136. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 135. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 136. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 137. व्यक्षीय संवधान (च्या संवधान) 138.				_ ' ' ' '		• -
15 श्री पर्णनाय महायण्डल विधान 77. श्री श्रीतिकाय पर्णनाय विधान 140. व्यवस्थान विधान 181. श्री श्रीतिकाय पर्णनाय विधान 140. व्यवस्थान विधान 181. श्री श्रीतिकाय पर्णायण्डल विधान 181. संबंध हर प्रधानमाय संग्रेष्ठ 181. स्वारंध प्रधानमाय संग्रेष्ठ 181. स्वारंध प्रधानमाय क्षायण्डल विधान 181. संबंध हर सार्वाण्य पर्णायण्डल विधान 181. संबंध व						
16. श्री गुर्तुनाय सहापण्डत विधान 78. श्री अंदिष्यत्र प्राच्याच विधान 141. विद्याद महापण्डत विधान 78. श्री अंद्रित्यत्र सहापण्डत विधान 141. विद्याद महापण्डत विधान 142. विज्ञ मु. सहापण्डत विधान 143. श्री महिल्ताय महापण्डत विधान 143. श्री महिल्ताय महापण्डत विधान 143. श्री महिल्ताय महापण्डत विधान 143. श्री महिलाय महापण्डत विधान 144. विचार सहापण्डत विधान 145. विमार कंटा कर्म सुनी त्रोत महापण्डत विधान 146. विमार महापण्डत विधान 147. विमार महापण्डत विधान 147. विमार महापण्डत विधान 148. श्री महापण्डत विधान 148. श्री महापण्डत विधान 149. विमार महापण्डत विधान 149. विधान 149. विमार महापण्डत विधान 149. विमार महापण						
श्री कुंदुनाथ प्रहामण्डल विधान 99, विदेत क्षेत्र महामण्डल विधान 141. विहार हायाम संसाद 143. क्षेत्र महामण्डल विधान 142. विम्न कुंदि स्थान 143. क्षेत्र महामण्डल विधान 143. क्षेत्र महामण्डल विधान 143. क्षेत्र महामण्डल विधान 144. क्ष्मी क्षात्र क्षेत्र स्थान 145. क्षात्र क्षेत्र स्थान क्षेत्र 146. विमान क्षात्र						
अर्थ प्रतिनाय प्रदासण्डल विधान अ. अर्थत् नाम विधान 14. प्रति संत्रेष्ठ अर्थ मिलनाय प्रदासण्डल विधान अ. प्रति संत्रेष्ठ अर्थ महासण्डल विधान अ. प्रति संत्रेष्ठ विधान अ. प्रते संत्रेष्ठ मामा-१ विधान अ. प्रते संत्रेष्ठ मामा-१ विधान अ. प्रते संत्रेष्ठ मामा-१ विधान अ. प्रते सं						
श. श. श. श. श. श. श. श. सम्पक्क आगणना विधान 143. वर्ष की इस लहरें विधान करें के इस लहरें विधान कर श. व्युक्त स्वाप्त प्रदान श्रमण्डल विधान 144. व्यूक्त स्वाप्त प्रदान श्रमण्डल विधान 145. वर्ष की स्वाप्त प्रदान श्रमण्डल विधान 147. विवरण श्रमण विधान 148. वर्ष मंत्र प्रवाद 148. वर्ष मंत्र मंत्र प्रवाद 148. वर्ष मंत्र						
श्री मुनियुक्तनाथ महामण्डल विधान श्री नामिनाय महामण्डल विधान श्री विधान श्री नामिनाय मामिनाय श्री ना						
श्री निमाय प्रहामण्डल विधान 81. चयु मृत्यु-अव विधान 145. विधान बंदन विधान विधान 147. विद्यान विधान 148. पर्य प्रवाद 148. पर्य प्रवाद 148. पर्य प्रवाद 148. पर्य प्रवाद 149. विधान विधान 149. विधान विधान 149. विधान विधान 149. वि						
श्री नेमिनाय महामण्डल विधान 84. प्राणिन प्रवास प्राणिन विधान 146. विस्त विकले मुहज़ा गए						
श्री पार्शनगय महामण्डल विधान 85. मृत्युज्य विधान 147. जिल्ला क्या है	21.					
से भी बहातीर सहामण्डल विधान 86. वर्ष अन्यहुँग रिधान 148. यर्ष प्रवाह	22.	श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान	84.		146.	बिन खिले मुरझा गए
25. श्री पंचरसंभारी विधान 87. चारित ह्युंडिव्रत विधान 190. विशेष स्वास्त स्वास्त स्वास्त विधान 190. विशेष स्वास्त स्वास्त विधान 190. विशेष स्वास्त स्वास्त विधान 190. विशेष स्वास स्वास विधान 190. विशेष स्वास स्वास विधान 191. विशेष स्वास विधान 192. विशेष स्वास विधान 193. विशेष स्वास विधान 194. विधान स्वास विधान 194. विधान स्वास विधान 195. विशेष स्वास क्षाम विधान 196. विशेष स्वास क्षाम विधान 197. विशेष स्वास स्वास विधान 198. विशेष स्वास स्वास क्षाम विधान 198. विधान स्वास क्षाम विधान 198. विशेष स्वास स्वास क्षाम विधान 198. विधान स्वास विधान 199. विशेष स्वास क्षाम विधान 199. विधान 199. विधान स्वास क्षाम विधान 199. विधान स्वास क्षाम विधान 199. विधान 199. विधान स्वास क्षाम विधान 199. विधान 199. विधान स्वास क्षाम विधान 199. विधान स्वास क्षाम विधान 199. विधान 199. विधान स्वास विधान 199. व	23.	श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान	85.	मृत्युञ्जय विधान	147.	जिन्दगी क्या है
श्री णाणेकार भंत्र महामण्डल विधान 88. सार्थिक जनवलिय विधान 150. वितर अमण चर्या (लक्स्प्ट आनवात परिष्ट (विधान के) लागु स्वयं मुस्तित विधान 151. विद्यार असिस्तीत विधान 152. विधान विधान 152. विधान विधान 153. विधान विधान 153. विधान विधान 154. विधान 154. विधान 155. विधान विधान	24.	श्री महावीर महामण्डल विधान	86.	लघु जम्बूद्वीप विधान	148.	धर्म प्रवाह
श्री सर्वसिद्धीग्रदायक श्री भक्तमस महामण्डल विधान 90. श्री मल्यमस् महामण्डल विधान 152. इप्रेण्ट्स चीपाई श्री सम्बंदिशस्त विधान 91. इन्हें विचान 152. इप्रेण्ट्स चीपाई श्री सुत्र कंश्च विधान 91. इन्हें विचान 153. इप्रेण्ट्स चीपाई श्री स्वान्यकर विधान 92. एक सी सक्तर नीधंकर विधान 154. लयु इच्च संग्रह चीपाई श्री विजातक वीपांकर विधान 93. तीन लोक विधान 155. समाधितन्त्र चीपाई श्री विजातक वीपांकर विधान 94. कल्युच्य विधान 155. समाधितन्त्र चीपाई श्री कितातक वीपांकर विधान 95. श्री सम्बंद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान 156. समाधितन्त्र चीपाई श्री क्षा कल्याचारी कल्याण संदिर विधान 95. श्री सम्बंद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान 158. बाल विद्यान साथ श्री क्षा कल्याचार विधान 97. सहक्रवान विधान (लयु) 159. वित्र क्षा कामा-1,2,3 तत्र त्यु पंचयेर विधान 98. तत्त्वाधं सुत्र विधान (लयु) 160. विदार क्षात्र साथ साथ-1,2,3 तत्र त्यु पंचयेर विधान 99. विवास पण्डल विधान (लयु) 161. भगवती आराधना श्री चैत्रलेक्तर पार्डकाय पिदान 100. पण्याक्ष विधान 162. वित्रवस साथ साथ-1,2,3 श्री वैत्रवस्त पार्डकाय पार्डकाय विधान 100. पण्याक्ष विधान 162. वित्रवस साथ-1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,1,	25.	श्री पंचपरमेष्ठी विधान	87.	चारित्र गुद्धिव्रत विधान	149.	भक्ति के पूरल
23. श्री सम्मेदिशस्त विधान 90. श्री गोम्मेटेश बाहुबली विधान 152. इष्टेणदेश चीणाई 173 सुंब सुंब विधान 153 द्रव्य संग्रह चीणाई 174 सुंब सुंब विधान 154 लाडू क्य संग्रह चीणाई 175 स्व सी समर विधान 155 द्रव्य संग्रह चीणाई 175 स्व सी समर विधान 155 सुंब संग्रह चीणाई 175 समाधितन्त्र चीणाई 175 सम्बर्ध स्व साधितन्त्र चीणाई 175 समाधितन्त्र चीणाई 175 समाधितन्त्र चीणाई 175 सम्बर्ध स्व साधितन्त्र चीणाई 175 सम्बर्ध साधितन्त्र साधिता 175 सम्बर्ध साधितन्त्र साधित साधि	26.	श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान	88.	क्षायिक नवलब्धि विधान	150.	विशद श्रमण चर्या
श्री सम्मेदिशस्त विधान 90. श्री योगम्देश बहुयती विधान 152. इष्टेषदेस चीपाई	27.	श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान	89.	लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान	151.	रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
श्री शुत स्कंप्र विधान 91. बृहद् निर्वाण केत्र विधान 153. द्रव्य संग्रह चौणाई		श्री सम्मेदशिखर विधान	90.	श्री गोम्मटेश बाहबली विधान	152.	इष्टोपदेश चौपाई
श्री यागमण्डल विधान 92. एक सी सक्तर तीर्थकर विधान 154. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई			91.	वहद निर्वाण क्षेत्र विधान	153.	दव्य संग्रह चौपाई
श्री जिनिविष्य पंचकत्याणक विधान 93. तीन लोक विधान 155. समापितन्त्र चीणाई श्री तिकालकर्ती तीर्थकर विधान 94. कल्युझ विधान 156. युभापित त्लाविल चीणाई श्री त्रकालकर्ती कल्याणकर्ती कल्याण मंदिर विधान 95. श्री सम्म्य हिम्बर चीणांत्री तिर्वणं क्षेत्र विधान 157. संकार विज्ञान भाग-3 स्वतंत्र मामदारण विधान 96. श्री चतुर्वित्राति तीर्थकर विधान (लयु) 159. नेतित्त हिम्सा भाग-1,2,3 त्वांत्र चेत्र महामण्डल विधान 99. कलाव्य सूत्र विधान (लयु) 160. विश्वर स्तांत्र संत्र हिम्सा विधान 160. चुण्यंत्र विधान (लयु) 161. भागवती आराधना श्री चेत्र सहमण्डल विधान 100. पुण्यास्त्र विधान 162. चित्रत्वन संत्रेषर भाग-1 श्री तिरापुण सम्पत्ति विधान 101. सन्त क्ष्मिं विधान 163. चित्रत्वन संत्रेषर भाग-1 श्री क्षिपण्डल विधान 103. श्री मालि-कुन्यु-अस्तराथ मण्डल विधान 164. जीवन की मन-स्थितियाँ श्री क्षमण्डल विधान 104. श्रावक्ष तदेषान 166. आराधन के मन-स्थितियाँ श्री विधान समाण्डल विधान 105. तार्थकर तदेष मामपालकर्त्राय मण्डल विधान 167. चुण्यं विधान 168. सम्बद्ध समाण-2 श्री विधान समाण्डल विधान 106. सम्बद्ध हर्गन विधान 169. विश्वर प्रवचन पर्यं श्री चींत्र सहामण्डल विधान 107. चुण्यं विधान 169. विश्वर प्रवचन पर्यं 169. विश्वर प्रवचन पर्यं 169. विश्वर स्वचन पर्यं श्री चींत्र सहामण्डल विधान 109. चारित्र चुण्यं मामपालकर्त्राय विधान 170. विश्वर महामण्डल विधान 170.						
32. श्री तिकालवर्ती तीर्थकर विधान 94. कल्पडूण विधान 156. पुणापित स्लावित चौणाई 137. श्री कल्पणकर्ती कल्पणण मंदिर विधान 95. श्री सम्मद शिक्षर चौधांसी निर्वण क्षेत्र विधान 157. संस्कार विधान 157. संस्कार विधान 157. संस्कार विधान 157. संस्कार विधान 158. चाल विधान 158. चाल विधान 159. श्री चर्चु विधान (लयु) 159. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3 त्राचं पृथ वृष्टी विधान (लयु) 159. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3 त्राचं पृथ वृष्टी विधान (लयु) 160. विधार को स्तृत विधान 160. पृथ्यास्त्रव विधान (लयु) 161. भगवती आरापान 162. विस्तरव सहामण्डल विधान 160. पृथ्यास्त्रव विधान 161. विस्तरव सहामण्डल स्थान 162. विस्तरव सहामण्डल विधान 163. विस्तरव सहामण्डल विधान 164. श्री विभाग 164. श्री विधान 165. श्री शानि-कृष्टु-अरहनाथ मण्डल विधान 166. आराप्य अर्चना 167. श्री विधार विधान 168. श्री विधार 166. आराप्य अर्चना 167. व्राच कुण्य सम्पाद विधान 168. श्री विधार 168. स्रुच कर्प्य माग-2 व्याच 168. श्री विधार 168. स्रुच कर्प्य माग-2 विधार विधार 169. श्री विधार 169. व्याच मार्चियां 169. विधार प्रच कर्प्य माग-2 व्याच मार्चियां 169. विधार प्रच कर्प्य माग-2 व्याच 169. व्याच मार्चियां 169. विधार प्रच कर्प्य माग-2 व्याच मार्चियां 169. विधार प्रच मार्चियां 170. विधार मार्चे विधार			93.	तीन लोक विधान		
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान 95. श्री सम्मिद्ध शिखर चौबोसी निर्वाण क्षेत्र विधान तथु 159. संस्कार विज्ञान तथु सम्बद्धाण विधान 96. श्री चर्त्र विद्यान (लयु) 159. वेति तक्ष समान 3 व्याप विद्यान विधान 97. सहस्त्रनाम विधान (लयु) 159. वेति तक्ष साम 1-1,2,3 तत्त्राधं सूत्र विधान 98. तत्त्राधं सूत्र विधान (लयु) 160. विदाद स्तोज संग्रह विधान 183. श्री चंतिहस्त सामण्डत विधान 190. गुण्यास्त्रव विधान 161. भगवती आराधना 162. विदाद स्तोज संग्रह 170-170, साम तिधान 163. विदाद स्तोज संग्रह 170-170, साम तिधान 163. विदाद स्तोज संग्रह 170-170, साम तिधान 164. जीवन की मनःस्थितियाँ 165. आराधन विधान 166. आराधन विधान 166. आराधन के मुमन 166. आराधन के मुमन 166. आराधन के मुमन विधान 166. आराधन के मुमन मुखन राधन के मुमन 166. आराधन के मुमन मुखन के मुमन मुखन के मुमन मुखन के मुमन मुझन के मुमन मुझन के मुमन मुझन के मुझ						
अंतु समकारण विधान 96. श्री चतुर्विहाति तीर्थकर विधान (लघु) 158. बाल विज्ञान भाग-3						
35. सबदोष प्रायम्बिस विधान 97. सहस्त्रनाम विधान (लयु) 159. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3 36. लयु पंचमेर विधान 98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लयु) 160. विश्वर स्त्रोत संग्रह 37. लयु पंचीर विधान 99. नैतिक प्रायम (लयु) 160. विश्वर स्त्रोत संग्रह 38. शी चंबलेक्ट्रस पारम्बती अराधना 190. पुण्यास्त्रव विधान 162. विश्वन संग्रस भाग-1 39. शी जिनगुण सम्पत्ति विधान 101. सप्त कृषि विधान 163. विश्वन संग्रस भाग-2 40. एक्टेशमब स्त्रोत विधान 102. तेर हुरीय भण्डल विधान 164. जीवन की मन:स्थितयाँ 41. शी कृषिमण्डल विधान 103. श्री शालिन-कृष्यु-अरहताथ मण्डल विधान 166. आराधना के पुण्या 42. शी विषायहार स्त्रोत महामण्डल विधान 105. तीर्थकर पंचक-वाणक तीर्थ विधान 166. आराधना के पुण्या 43. शी भग्नसम सहामण्डल विधान 105. तीर्थकर पंचक-वाणक तीर्थ विधान 167. मूक उपदेश भाग-2 44. वालु नहमण्डल विधान 106. साम्यक, इर्जान विधान 168. मूक उपदेश भाग-2 45. लयु नवग्रह शांति महामण्डल विधान 107. श्रुतहान कृष विधान 169. विश्वर प्रचक-वाणक तीर्थ विधान 169. विश्वर प्रचल पर्च 46. सूर्य अरिप्टनिवासक श्री पट्मप्रभ विधान 109. बार्याक बुण्याक विधान 170. विश्वर स्त्रान पर्चाम 48. शी कर्मदहन महामण्डल विधान 109. व्यापित्र शुद्ध विधान 170. विश्वर महामण्डल विधान 170. व्यापित सुण्याक विधान 170. विश्वर महामण्डल विधान 170. व्यापित सुण्याक विधान 171. जाताची ते स्त्राच महामण्डल विधान 172. वीर्याय स्त्राच विधान 173. विश्वर अतिक पण्याक तिथि विधान 173. विश्वर अतिक पण्याचे तिथान 173. विश्वर अतिक पण्याचे तिथान 174. संगीत असून 175. आरती चालीसा संग्रह 48. नी कर्मप्रम महामण्डल विधान 112. तीर्थकर पंचकल्याणक विधान 174. संगीत असून 175. आरती चालीसा संग्रह 48. वीर्य विधान 175. श्री शांतिताथ विधान 176. भक्तम पाम विधान 177. वहार महामण्डल विधान 178. श्री शांतिताथ विधान 179. विश्वर महामण्डल विधान 179. विश्वर विधान 179. विश्वर विधान 179. विश्वर विधान 179. विश्वर क्रम पण्याच संग्वर पण्याच संग्रह 48. विधान महामण्डल विधान 179. श्री शांतिवाथ विधान 179. विश्वर क्रम पण्याच संग्रह 48. विश्वर महामण्डल विधान 179. विश्वर संग्वर पण्याच संग्रह 48. विश्वर संग्वराण पण्याच संग्रह 49. वार्योच सुण्य संग्वर विधान 179. विश्वर संग्वर पण्याच संग्रह 49. वार्योच सुण्य संग्वर विधान 179. विश्वर संग्वर माम संग्रह 49.						
36. लयु पंचमेह विधान 98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लयु) 160. विशद स्तीत्र संग्रह 37. लयु नंदीश्वर महामण्डल विधान 99. वैलोक्य मण्डल विधान 161. भगवती आराधना 38. श्री चँवलेक्य पार्डवताय विधान 100. पुण्यास्त्रव विधान 162. वितवन संगेलर भगा- 1 39. श्री विज्ञान समान विधान 101. सप्त ऋषि विधान 163. वितवन संगेलर भगा- 2 40. एकीभाव स्तीत्र विधान 103. श्री श्रीत-कुन्यु-अस्ताय मण्डल विधान 164. जीवन की मन-स्थितलाँ 41. श्री ऋषिमण्डल विधान 104. श्री कत प्रायदिश्व विधान 166. आराध्य अर्चना 43. श्री मस्त्रम महामण्डल विधान 105. तीर्थकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान 166. आराध्य अर्चना 44. वाल्यु नहार अर्दात विधान 106. सम्यक् इर्दान विधान 166. आराध्य अर्चना 45. लयु नहार अर्दात विधान 106. सम्यक् इर्दान विधान 167. कृत उपदेश भाग- 1 46. लयु नहार इर्तात विधान 107. श्रुततान ऋत विधान 169. विश्वर आपन विधान 47. श्री चौरत ऋदि महामण्डल विधान 109. चौरति विधान 170. विश्वर इर्ता महामण्डल विधान 48. श्री चौरत ऋदि महामण्डल विधान 110. लयु आर्ति विधान 171. जरा सोचो तो 50. श्री चौरत ऋदि महामण्डल विधान 111. किल्कुण्ड पादनंत्रम विधान 173. विश्वर भिल्ल सुक्ता 51. बृहद कृषि महामण्डल विधान 112. तीर्थकर पंचकल्याणक तिथि विधान						
33. त्यु नंदी:बर महामण्डल विधान 99. प्रैलोक्य मण्डल विधान (लयु) 161. भगवती आरापना 38. श्री चॅंबलेक्द पार्ट्यमंग्य विधान 100. प्रण्यास्त्रव विधान 162. चिंतलक संगेलर भाग-1 39. श्री जिनगुण सम्पित विधान 101. सम्प कृषि विधान 163. चिंतलक संगेलर भाग-2 40. परिभाव स्तात्र विधान 102. तेरह द्वीप मण्डल विधान 164. जीवन की मन:स्थितियाँ 41. श्री कृषिभण्डल विधान 103. श्री शानिन-कुण्यु-अस्ताय मण्डल विधान 165. आराध्य अर्चना 42. श्री विपायहार स्तात्र महामण्डल विधान 104. आवक कर रोण प्राथियतिया 166. आराध्य अर्चना 44. वास्तु महामण्डल विधान 106. सम्प्रक् इर्शन विधान 166. आराधन के सुमन 45. लयु नवबह शारित महामण्डल विधान 106. सम्प्रक् इर्शन विधान 167. मूक उपदेश भाग-2 46. सूर्य अर्पट्टी-वादक श्री पट्टमश्रम विधान 107. श्रुतहान कर विधान 169. विश्वत प्रक्रमण्डल विधान 47. श्री चॅंसिट महित मण्डल विधान 109. चारित्र गुद्दि विधान 170. जर सोचो तो 48. श्री कंसिट महामण्डल विधान 110. लयु आर्ति विधान 171. जर सोचो तो 49. श्री चंंसित तो स्रेक्ट महामण्डल विधान 111. किलकुण्ड पार्क्वाय पार्क्वाय विधान 173. विश्वत भूक्तले 51. बृहद कृषि महामण्डल विधान 112. ती स्रेक्ट पंक्कायणक विधान 174. संगीत प्रस्त 52. श्री नवबह आराम पंक्तले विधान						
अ. श्री चॅबलेडबर पाहर्बनाथ विधान 100. पुण्यास्त्रव विधान 162. चिंतवन सरेग्वर भाग-1						
श्री जिनगुण सम्यत्ति विधान 101. सन्त ऋषि विधान 163. वितवन सरोवर भाग-2 164. जीवन की मन-स्थितियाँ 165. जीविकर दंगकर, जायाश्वरति विधान 166. जाराधना के मुमन 167. मुक्त उपदेश भाग-1 168. मुक्त उपदेश भाग-1 168. मुक्त उपदेश भाग-2 169. विश्वर प्रवस्त विधान 169. विश्वर प्रवस्त प्रमान 170. विश्वर प्रवस्त विधान 170. विश्वर प्रवस्त प्रमान 170. विश्वर प्रवस्त विधान 170. विश्वर प्रवस्त विधान 171. विश्वर प्रवस्त विधान 172. विश्वर प्रवस्त विधान 173. विश्वर प्रवस्त विधान 174. संगीत प्रमूत 174. विश्वर प्रवस्त विधान 175. विश्वर प्रवस्त विधान 175. विश्वर प्रवस्त विधान 176. विश्वर प्रवस्त विधान 177. विश्वर प्रवस्त विधान 178. विश्वर प्रवस्त प्रमूत 178. विश्वर प्रवस्त विधान 178. विश्वर प्रवस्त विधान 179. विश्वर विधान 179. विश्वर प्रवस्त विधान 179. विश्वर प्रवस्त विधान 179. विश्वर प्रवस्त विधान 179. विश्वर प्रवस्त विधान 179. विश्वर विधान 179. विश्वर प्रवस्त विधान 179. विश्वर विधान 179. विश्वर विधान 179. विश्वर प्रवस्त विधान 179. विश्वर विधान						
40. एकी भाव स्तात्र विधान 102. तेरह द्वीप मण्डल विधान 164. जीवन की मानःस्थितियाँ 141 श्री क्षिपण्डल विधान 103. श्री शानिन-कुन्यु-अरहनाध्य मण्डल विधान 166. आराध्य अर्चना 164. श्री विषायहार स्तात्र महामण्डल विधान 104. श्रीवक तर तथा प्रायदिवन विधान 166. आराध्य अर्चना 164. श्री विषायहार स्तात्र महामण्डल विधान 105. तीर्थकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान 167. मूक उपदेश मानः 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1						
41. श्री ऋषिमण्डल विधान विश्व विधान विश्व विधान विश्व श्री विषाणद्वार सोचा महामण्डल विधान विश्व श्री विषाणद्वार सोचा महामण्डल विधान विश्व श्री विषाणद्वार सोचा महामण्डल विधान विश्व श्री भक्ताश्व महामण्डल विधान विश्व संक्षेत्र चंत्रकरणाण्डल सीचे विधान विश्व श्रूप्त भाग-1 विश्व संक्ष्य प्रदेश भाग-1 विश्व स्वाप्त सहामण्डल विधान विश्व स्वाप्त स्वाप्त विधान विश्व सुकर उपदेश भाग-2 लघु नवमह सांति महामण्डल विधान विश्व सुकर उपदेश भाग-2 लघु नवमह सांति महामण्डल विधान विश्व सुकर उपदेश भाग-2 विश्व सुकर विधान विश्व सुकर अपदेश भाग-3 विश्व सुकर विधान विश्व सुकर अपदेश भाग-3 विश्व सुकर विधान विश्व सुकर अपदेश भाग-4 विश्व सुकर विधान विश्व सुकर अपदेश सहमण्डल विधान विश्व सुकर महमण्डल विधान विश्व सुकर महमण्डल विधान विश्व सुकर महमण्डल विधान विश्व सुकर सहमण्डल विधान विश्व सुकर सहमण्डल विधान विश्व सुकर महमण्डल विधान विश्व सुकर महमण्डल विधान विश्व सुकर महमण्डल विधान विश्व सुकर महमण्डल विधान विश्व सुकर सहमण्डल विधान विश्व सुकर सुकर सुकर विधान विश्व सुकर सुकर सुकर विधान विश्व सुकर सुकर सुकर सुकर विश्व विधान विश्व सुकर सुकर सुकर विधान विश्व सुकर सु						
42. श्री विचापहार स्तोत्र महामण्डल विधान 104. श्रावक क्रत दोण प्रायशिक्ष विधान 166. आराधना के सुमन 43. श्री भत्तम्त्रम सहमण्डल विधान 105. तीर्थकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान 167. मूक उपदेश भाग-1 44. चालनु महामण्डल विधान 106. सम्प्यक इंति विधान 169. वेतर इंत्यन पंच 45. तणु नवग्रह मांति महामण्डल विधान 107. श्रुताता कृत विधान 170. विवाद प्रचचन पर्व 47. श्री चौरत क्रद्वि महामण्डल विधान 110. लापु मांति विधान 170. विवाद भृति भीष्ण 48. श्री कर्तेद्वन महामण्डल विधान 110. लापु मांति विधान 172. विवाद भित्त भित्त पृष्ट मार्च विधान 49. श्री नीविदेश महामण्डल विधान 111. किरिकर पहामण्डल विधान 173. विवाद भृति भित्त पृष्ट मुक्तवली 50. श्री नवदेश महामण्डल विधान 113. विजय श्री विधान 174. मंगीत प्रसूत 52. श्री नवदेश महामण्डल विधान 115. श्री आंतिताध विधान (सागीत) 176. भक्तम प्रमूत आती वालीसा संग्रह 53. स्रोत संप्राध पृत्व विधान 115. श्री आंतिताध विधान (सागीत) 177. <						
43. श्री भक्तासप बहामण्डल विधान 105. तीर्थंकर पंचकर्त्याणक तीर्थ विधान 167. मूक उपदेश भाग-1 44. बालु महामण्डल विधान 106. सम्यक् इर्दान विधान 168. मूक उपदेश भाग-2 45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान 107. श्रुतज्ञान व्रति विधान 109. विश्वर झान ज्योति 47. श्री च्यांसट नहिंद्र महामण्डल विधान 109. चारित्र श्रुद्धि विधान 170. विश्वर झान ज्योति 48. श्री कर्मदंद्वन महामण्डल विधान 110. लघु शांति विधान 172. विश्वर भक्ति पण्चिण्य 49. श्री चौर्यात तीर्थंकर महामण्डल विधान 111. किलुकुण्ड पार्द्यनाय विधान 173. विश्वर भक्ति पण्चिण्य 50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान 112. तीर्थंकर पंचकर्त्याणक तिथि विधान 175. आरती चालीमा संग्रह 51. बृहद कृषि महामण्डल विधान 113. विजय श्री विधान 175. आरती चालीमा संग्रह 52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान 114. श्री आर्दिताय विधान (रानीला) 176. भक्तारी चालीमा संग्रह 53. वर्गंजरी श्री पंच बालविति विधान 115. श्री शांतिनाय विधान (रानीला) 176. भक्तारी चालीमा संग्रह 54. श्री तत्थार्थ सुत्र महामण्डल विधान 116. श्री आदिताय विधान (रानीला) 177. बढ़ा गाँव आरती चालीमा संग्रह 55. श्री सहमण्डल विधान 116. श्री आदिताय विधान (सानोद) 177. बढ़ा गाँव आरती चालीमा संग्रह 56. बृहद नंदीस्तर महामण्डल विधान 117. पण्डलमाम विधान 179. विश्वर महामण्डल विधान 118. दिव्य देशात विधान 179. विश्वर महामण्डल विधान 119. श्री शांतिनाय विधान (रानीहा) 181. विश्वर विधान 182. काव्य पुञ्ज विधान 182. काव्य पुञ्ज विधान 183. पण्डलमाम संग्रह 57. बहानुन्युन्य महामण्डल विधान 120. नवग्रह शांति विधान 183. पण्डलमाम संग्रह 68. श्री रालवश्य अधापाना विधान 121. रह्मा वस्त विधान 184. श्री विवारन विधान विधान विधान विधान 184. विधान विधान 184. विधान 184. विधान विधान 185. विजालिया विधान 185. विजालिया विधान विधान विधान विधान विधान विधान विधान 185. विजालिया विधान विध						
44. बालु महामण्डल विधान 106. सम्यक् दर्शन विधान 168. क्रूक उपदेश भाग-2 लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान 107. श्रुतचान ऋत विधान 169. विग्रह प्रकवन पर्ष 4 46. सूर्थ अपिट्निवास्क श्री पट्नप्रभ विधान 108. चारित्र शुद्धि विधान 170. विग्रह प्रकवन पर्ष 4 47. श्री चींसिट ऋदि महामण्डल विधान 109. चारित्र शुद्धि विधान 171. जरा सोचो तो 172. विग्रह भितामण्डल विधान 110. लघु शांति विधान 172. विग्रह भितामण्डल विधान 111. करिलकुण्ड पार्श्वनाथ विधान 173. विग्रह भितामण्डल विधान 112. तींधेकर पंचकर-पाणक विधि विधान 173. विग्रह भितामण्डल विधान 113. विजय श्री विधान 174. संगीत प्रसूच 175. आरती चालीसा संग्रह 175. वृहद ऋषि महामण्डल विधान 115. श्री श्री शांतिशाय विधान 175. आरती चालीसा संग्रह 175. वृहद ऋषि महामण्डल विधान 115. श्री श्री शांतिशाय विधान (गानीला) 176. भक्तमर भावना 175. श्री तलार्थ सूत्र महामण्डल विधान 115. श्री श्री शांतिशाय विधान (गानीला) 176. भक्तमर भावना 175. श्री तलार्थ सूत्र महामण्डल विधान 115. श्री श्री शांतिशाय विधान (गानीला) 176. भक्तमर भावना 176. श्री श्री पच बालयित विधान 115. श्री श्री शांतिशाय विधान (गानीला) 176. भक्तमर भावना 177. वह गांत आरती चालीसा संग्रह 177. वह गांत आरती चालीसा संग्रह 177. वह गांत आरती चालीसा संग्रह 178. वह गांत अपनी चालीसा संग्रह 179. विग्रह महामण्डल विधान 117. पट्न व्यावना 118. विष्य देशाना 118. विषय देशान 119. विग्रह महामण्डल विधान 119. श्री शांतिशाय विधान (वाई) 181. विग्रह वीतरामी संग्रह 182. काव्य पुज्ज वालीसा विधान 183. पट्न जाव्य प्रज्ञ वालीसा संग्रह 184. श्री विवान 184. श्री वेवनकर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 184. विवान 184. श्री वेवनकर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 184. विवान 184. व्यावन विधान 184. विवान विधान 184. विवान 184. विवान 184. विवान 184. विवान विधान 184. विवान	42.					
45. लयु नवग्रह शांति महामण्डल विधान 46. वर्ग अर्पर-निवासक औ पट्रमप्रभ विधान 47. श्री वर्ग स्वर्मण्डल विधान 48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान 49. श्री चौंसर कर हम प्रमाण्डल विधान 49. श्री चौंसर कर महामण्डल विधान 49. श्री चौंसर महामण्डल विधान 50. श्री नवरेवर महामण्डल विधान 51. व्हर्म क्षा महामण्डल विधान 51. विश्व श्री चौंसर महामण्डल विधान 52. श्री नवरेवर महामण्डल विधान 53. क्ष्म वर्म क्षा महामण्डल विधान 54. श्री नवर्म महामण्डल विधान 55. श्री नवर्म महामण्डल विधान 56. श्री वर्म क्षम प्रमाण्डल विधान 57. व्हर्म क्ष्म महामण्डल विधान 58. श्री नवर्म महामण्डल विधान 59. श्री महामण्डल विधान 50. श्री महामण्डल विधान 51. श्री आर्थिताथ विधान 53. क्ष्म व्याप सहामण्डल विधान 54. श्री तत्त्रम सहामण्डल विधान 55. श्री महामण्डल विधान 56. श्री हमाण्डल विधान 57. वहानुकुक्ष महामण्डल विधान 58. श्री द्वाराण्डल विधान 59. श्री महामण्डल विधान 59. श्री स्वलग्र आपाण्यल विधान 51. वहानुक्ष महामण्डल विधान 51. वहानुक्ष महामण्डल विधान 52. वहानुक्ष महामण्डल विधान 53. वहानुक्ष महामण्डल विधान 54. वहानुक्ष महामण्डल विधान 55. श्री महामण्डल विधान 56. श्री द्वाराण्डल विधान 57. वहानुकुक्ष महामण्डल विधान 58. श्री दालक्षण धर्म विधान 59. श्री स्वलक्ष महामण्डल विधान 51. सहानुक्ष महामण्डल विधान 52. सोमाण्डल विधान 53. प्रमाण्यल विधान 54. वहानुक्ष महामण्डल विधान 55. श्री सहामण्डल विधान 56. श्री इस्तलक्ष धर्म विधान 57. वहानुक्ष महामण्डल विधान 58. श्री दालक्षण धर्म विधान 59. श्री स्वलक्ष महामण्डल विधान 51. द्वाराण्डल विधान 52. सोमाल्डल क्षाल विधान 53. विधाल क्षाल धर्म विधान 54. श्री सिल्य क्ष महामण्डल विधान 55. विधालिया विधान 56. व्राह्म सुलन चालीमा संग्रह 57. विधाल क्षाल विधान 58. विधालिया विधान 59. श्री सिल्य क्ष महामण्डल विधान 50. विधाल क्षाल विधान 51. विधाल क्षाल विधान 52. विधाल क्षाल विधान 53. विधाल क्षाल विधान 54. विधाल क्षाल विधान 55. विधाल क्षाल विधान 56. वृद्ध क्षाल क्षा	43.					
46. सूर्य असिप्टीनबारक श्री पट्सप्रभ विधान 108. ज्ञान पच्चीसी विधान 170. विहाद ज्ञान ज्यांति 47. श्री चींसार ऋद्वि सहामण्डल विधान 109. चारित्र ग्रुद्धि विधान 171. जस सोचो तो 171. जस सोचो तो 171. जस सोचो तो 172. विहाद सहामण्डल विधान 110. लयु ज्ञांति विधान 172. विहाद मुक्तवस्वी 173. विहाद मुक्तवस्वी 174. संगीत प्रसूत 174. संगीत प्रसूत 175. अस्ती चार्लाम 175. आस्ती चार्लाम संग्रह 175. आस्ती चार्लाम संग्रह 175. आस्ती चार्लाम संग्रह 175. आस्ती चार्लाम संग्रह 175. अस्ती चार्लाम संग्रह 175. अस्ति चार्लाम संग्रह 175. अस्ती चार्लाम संग्रह 175. अस्ति चार्लाम 175. अस्ति चार्लाम 175. अस्ति चार्लाम संग्रह 175. अस्तर्भ स्वाप्य 175. अस्तर्भ संग्रह 175. अस्तर्भ संग	44.	वास्तु महामण्डल विधान				
47. श्री चौंसट कद्वि महामण्डल विधान 109. चारिज 3द्विंदि विधान 171. जरा सोचो तो 48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान 110. लयु आति विधान 172. विश्वद श्रीक्त पीयूण 49. श्री चौंबीस तीर्थकर महामण्डल विधान 111. कीर्थकर पंचकल्याणक तिथि विधान 173. विश्वद श्रीक्त पीयूण 50. श्री नवंदेवता महामण्डल विधान 112. तीर्थकर पंचकल्याणक तिथि विधान 174. संगीत प्रसूत 51. बृहद कृषि महामण्डल विधान 113. विजय श्री विधान 175. आस्ती चालीसा संग्रह 52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान 114. श्री आदिनाय विधान (रानीला) 176. अस्त्रस पांति चालीसा संग्रह 53. वर्गकरी श्री पंच बालयति विधान 115. श्री आदिनाय विधान (रानीला) 176. अस्त्रस पांति चालीसा संग्रह 54. श्री तत्वार्थ मृत्र महामण्डल विधान 116. श्री आदिनाय पंचकल्याणक विधान 178. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह 55. श्री सहम्रणच्छल विधान 117. पंच रच्च व्याप्त 118. दिव्य देशा विधान 179. विश्वद महामण्डल विधान 186. द्व्य देशा विधान विधान 189. विश्वद वितारणी संत 58. श्री दालक्षण धर्म विधान 189. विश्वद वितारणी संत 59. श्री रतलक्ष धर्म विधान 120. नवग्रह श्रांति विधान 182. काव्य पुज्ज 59. श्री रतलक्ष अद्यापाना विधान 121. रहा वस्त्रम विधान 184. श्री विवान 184. विश्वत्व महामण्डल विधान 121. रहा वस्त्रम विधान 184. विवाद सहामण्डल विधान 184. विवाद सहामण्डल विधान 121. रहा वस्त्रम विधान 184. विवाद सहामण्डल विधान 185. विजालिया तीयपूजन आस्ती चालीसा संग्रह 166. अभित्रव बृहद करलक्ष विधान 122. तीर्थकर विधान 185. विजालिया तीयपूजन आस्ती चालीसा संग्रह	45.	लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान			169.	विशद प्रवचन पर्व
श्री कर्मदहन महामण्डल विधान 110. लघु शांति विधान 172. विश्वद भिक्त पीयूण श्री चीवीय तीर्थकर महामण्डल विधान 111. किल्कुण्ड पार्क्नाच विधान 173. विश्वद भुक्तवर्खा श्री नवदेवता महामण्डल विधान 112. तीर्थकर पंचकल्याणक तिथि विधान 174. संगीत सहून श्री नवदेवता महामण्डल विधान 113. विजय श्री विधान 175. आरती पालीसा संग्रह श्री नवस्त्रह शांति महामण्डल विधान 114. श्री शांतिनाथ विधान (सागोद) 176. भक्तस्रम भावना श्री तत्त्राचे श्री पंच बालयित विधान 115. श्री शांतिनाथ विधान (सागोद) 177. वहा गाँव आरती पालीसा संग्रह श्री तत्त्राचे श्री पंच बालयित विधान 115. श्री शांतिनाथ विधान (सागोद) 177. वहा गाँव आरती पालीसा संग्रह श्री तत्त्राचे सुत्र महामण्डल विधान 116. श्री शांतिनाथ विधान (सागोद) 178. वहा गुक्तवर्खा संग्रह श्री तत्त्राचे सामण्डल विधान 117. पट्चण्डमाम विधान 179. विश्वद महामण्डल विधान श्री सहस्रमाम महामण्डल विधान 118. दिव्य देशना विधान 180. विश्वद वितारणी संग्रह श्री दश्तत्रम आराधना विधान 120. वनग्रह शांति विधान 182. काव्य पुज्ज जाण श्री तत्त्रच शाधाचान विधान 121. संग्रह कमण विधान 184. श्री वेवन्तर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह श्री तिस्तरच करात्राचल विधान 121. संग्रह कमण विधान 184. श्री वेवन्तर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह श्री तिस्तरच कुद करलावर विधान 123. तीर्थकर विधान 185. विज्ञालिया तीयपूजन आरती चालीसा संग्रह	46.	सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान			170.	
4). श्री चौबीस तीर्थकर महामण्डल विधान 111. किल्कुण्ड पार्श्वनाथ विधान 173. विशद मुस्त्रवली 180. श्री नवदेवता महामण्डल विधान 112. तीर्थकर पंचकर्त्वाणक तिथि विधान 174. संगीत प्रस्त 175. आरती वालीसा संग्रह 180. श्री नवसह शांति महामण्डल विधान 113. विवाय श्री विधान 175. आरती वालीसा संग्रह 180. श्री नवसह शांति महामण्डल विधान 114. श्री आंतिनाथ विधान (रागीला) 176. भरतमार भावना 177. वहा गाँव आरती चालीसा संग्रह 180. श्री तालाथ सूत्र महामण्डल विधान 115. श्री आंतिनाथ विधान (सागोर) 177. वहा गाँव आरती चालीसा संग्रह 180. श्री नालाथ सूत्र महामण्डल विधान 117. पट् तण्डागम विधान 178. सहक्कुट विजायंचना संग्रह 180. वहाद त्रीतराम पंचकर्त्वाणक विधान 180. विशद विजनवाणी संग्रह 180. वहाद त्रीतराम पंचकर्त्वाणक विधान 180. विशद विजनवाणी संग्रह 180. वहाद त्रीतराम पंचान 180. विशद विजनवाणी संग्रह 180. श्री रहतलक्षण धर्म विधान 190. श्री आंतिनाथ विधान 182. काळ्य पुञ्ज 181. विश्वय अराध्याना विधान 182. काळ्य पुञ्ज 181. विश्वय सहामण्डल विधान 121. संग्रह काळ्य पुञ्ज व्याच्य आराधना विधान 183. श्री यहान प्रचारण विधान 184. श्री चेवतंत्रक सहामण्डल विधान 122. संग्रह काळ्य विधान 184. श्री चेवतंत्रक सहामण्डल विधान 123. तीर्थकर विधान 185. विजालिया तीर्यपूजन आरती चालीसा संग्रह 186. श्री मंत्रव कुहद् करणतह विधान 123. तीर्थकर विधान 185. विजालिया तीर्यपूजन आरती चालीसा संग्रह 186. श्री चेवतंत्रक सहामण्डल विधान 187. विधान संग्रह 187. विधान 188. श्री चेवतंत्रक सहामण्डल विधान 187. विधान संग्रह 187. विधान संग्रह 187. विधान संग्रह 187. विधान 188. विधान संग्रह 187. विधान 188. विधान संग्रह 187. विधान स	47.	श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान	109.	चारित्र शुद्धि विधान	171.	जरा सोचो तो
50. श्री नवंदसता महामण्डल विधान 112. तीर्थंकर पंचकरूत्याणक तिथि विधान 174. संगीत प्रसूत्त 51. बृहदू कृषि महामण्डल विधान 113. विजय श्री विधान 175. आरती चालीसा संग्रह 52. श्री नवग्रह ग्रांति महामण्डल विधान 114. श्री आदिनाथ विधान (सागोद) 177. मक्त ग्रांति आरती चालीसा संग्रह 54. श्री तत्त्रवार्थ महामण्डल विधान 116. श्री आदिनाथ पंचकरूपाणक विधान 178. सहहस्कृट जिनाप्त्रंना संग्रह 55. ग्री सहक्रवाम महामण्डल विधान 117. पद्य स्वामा विधान 189. विश्वद महा अर्थना संग्रह 56. गृहदू नंदीस्वर महामण्डल विधान 118. दिय स्वेशा विधान 189. विश्वद वितामा संग्रह 57. महामुख्तेय महामण्डल विधान 119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाई)) 181. विश्वद वितामा संग्रह 58. श्री दसलक्षण धर्म विधान 120. नवस्रह ग्रांति विधान 182. काव्य पुञ्ज 59. श्री स्तत्वश्व अराधाधान विधान 121. रेसा वन्धन विधान 183. पञ्ज जाव्य 61. अस्तित्वश्वक सहामण्डल विधान 122. तीर्थंकर विधान 184. श्री व्यंतन्तकर का दिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 62. अस्तित्वश्वक सहामण्डल विध	48.	श्री कर्मदहन महामण्डल विधान	110.	लघु शांति विधान	172.	विशद भक्ति पीयूष
जुहदु ऋषि महामण्डल विधान 113. विजय श्री विधान 175. आरती चालीसा संग्रह श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान 114. श्री आदिताथ विधान (रानीला) 176. भक्तम्म भावना श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान 115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद) 177. वहा वां आरती चालीसा संग्रह श्री तत्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान 116. श्री आदिताथ पंचकत्वाणक विधान 178. सहस्रकूट निनार्चना संग्रह श्री सहस्रनाथ महामण्डल विधान 117. पर्चाव्यनाम विधान 179. विश्वर महा अर्चना संग्रह श्री सहस्रनाथ महामण्डल विधान 118. दिव्य देशना विधान 180. विश्वर विभाग संग्रह श्री सहार विवाद विधान 119. श्री आदिताथ विधान (रेवाई) 181. विश्वर विभाग संग्रह श्री रत्नतथ आपायाना विधान 120. नवग्रह शांति विधान 182. काव्य पुज्ज श्री रत्नतथ आपायाना विधान 121. रक्षा वस्मन विधान 183. पञ्च जाव्य श्री सिद्धक महामण्डल विधान 122. संग्रह कमला विधान 184. श्री वेवन्तवर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह श्री सिद्धक महामण्डल विधान 123. तीर्थकर विधान 185. विजोलिया तीयपूजन आरती चालीसा संग्रह	49.	श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान	111.	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान	173.	विशद मुक्तावली
51. बृहद् ऋषि महामण्डल विधान 113. विजय श्रे विधान 175. आत्तरी चालीसा संग्रह 52. श्री नवप्रद्र झांति महामण्डल विधान 114. श्री आदिनाय विधान (रानीला) 176. अत्तर्भा श्री भी पंच बालयित विधान 115. श्री आंतिनाथ विधान (सामोट) 177. बहा गाँव आरती चालीसा संग्रह 54. श्री तत्त्रवाथ स्वापण्डल विधान 116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान 178. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह 55. श्री सहस्रवाम सहामण्डल विधान 117. पट्च व्हाम विधान 179. विश्वर विजात नाणी संग्रह 56. गृहद् न्दीयन यहामण्डल विधान 118. टिक्य देशाना विधान 181. विश्वर वीतरामी संत 57. महामुख्त्रव यहामण्डल विधान 119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाई) 181. विश्वर वीतरामी संत 58. श्री तत्त्रव आराधना विधान 120. नवप्रह सांति विधान 182. काव्य पुज्ज 59. श्री तिस्वरब महामण्डल विधान 121. रहाम विधान 184. श्री व्हन्तन्त्रवर महामण्डल विधान 61. अमित्व बुद्द करात्रव विधान 122. तीर्थंकर विधान 185. बिजालिया तीर्यपूजन आरती चालीसा संग्रह	50.	श्री नवदेवता महामण्डल विधान	112.	तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान	174.	संगीत प्रसुन
52. औ नवग्रह शांति महामण्डल विधान 114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला) 176. भक्तप्रम भावना 53. कर्मजवी श्री पंच बालयित विधान 115. श्री श्री तिलाथ विधान (सामांद) 177. बढ़ा गाँव आरती चालीमा संग्रह 54. श्री तत्त्वाचं सृत्र महामण्डल विधान 116. श्री आतिलाथ विधान 178. सहस्तृत्र हानाचंना संग्रह 55. श्री सहस्त्रमण्डल विधान 118. विव्य देशना विधान 180. विवाद जिनवाणी संग्रह 57. महामृत्युंत्रय महामण्डल विधान 119. श्री आदिनाथ विधान (स्वाई) 181. विवाद वीतराणी संत 58. श्री रत्त्रत्रय आराधना विधान 120. नवसह आति विधान 182. काव्य पुञ्ज 59. श्री रत्त्रत्रय आराधना विधान 121. रहा बन्दा बन्दा विधान 183. पत्र जाव्य 60. श्री सिद्धच्क महाण्डल विधान 122. सोलह काण विधान 184. श्री चेवलवर का वितहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 61. अभितव बृहद् कत्यति विधान 123. तीर्थंकर विधान 185. विजालिया तीरपूजन आरती चालीसा संग्रह	51.		113.	विजय श्री विधान	175.	आरती चालीसा संग्रह
15. अ अर्जाती श्री पंच बातयिति विधान 115. श्री आंतिनाथ विधान (सामोद) 177. बडा गाँव आस्ती चालीसा संग्रह श्री तत्त्रायं सूत्र महामण्डल विधान 116. श्री आदिताथ पंचकल्याणक विधान 178. सहब्बदूट जिनाचंना संग्रह श्री सहह्वामा बहामण्डल विधान 117. पट्चण्डागम विधान 189. विश्वर होत्त्रा संग्रह बहुद नंदीहबर महामण्डल विधान 118. विद्या देताना विधान 189. विश्वर होतन्त्राणी संग्रह श्री दालतक्षण धर्म विधान 119. श्री आदिनाथ विधान 181. विश्वर वित्तराणी संग्रह श्री दालतक्षण धर्म विधान 120. नवग्रह आर्ति विधान 182. काव्य पुञ्ज श्री रत्त्रत्य आराधना विधान 121. संग्रा बन्धन विधान 183. पञ्च जाय श्री सिद्धच्क्र महामण्डल विधान 122. संग्रा बन्धन विधान 184. श्री चेवलंक्य का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह श्री मिद्धच्क्र महामण्डल विधान 123. तीर्थंकर विधान 185. विज्ञालिया तीर्थपूजन आस्ती चालीसा संग्रह			114.	श्री आदिनाथ विधान (रानीला)		
54. श्री तत्वार्थ मूत्र महामण्डल विधान 116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान 178. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह 55. श्री सहस्रवान महामण्डल विधान 117. पट् व्यव्यवान विधान 119. विश्व देशना विधान 56. बृहद नंदीस्वर महामण्डल विधान 118. दिव्य देशना विधान 180. विश्व देशनामी संग्रह 57. महामुख्त्रव महामण्डल विधान 119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाई)) 181. विश्व द्रश्वेतरामी संग 58. श्री रतालक्ष आपाधना विधान 120. नवग्रह श्रांति विधान 182. काव्य पुञ्च 59. श्री रतालक्ष आपाधना विधान 121. रहाम विधान 183. पञ्च जाव्य 60. श्री सिद्धक्र महामण्डल विधान 122. तीर्थकर विधान 184. श्री व्यवनकर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 61. अभितत्व बृहद कल्पनत विधान 123. तीर्थकर विधान 185. बिजालिया तीरपूजन आरती चालीसा संग्रह			115.			
55. श्री सहस्रवास महामण्डल विधान 117. पट् खण्डागम विधान 179. विशद महा अर्चना संग्रह 56. बृहद् नंदीत्रवर महामण्डल विधान 118. दिव्य देशना विधान 180. विशद् जिनवाणी संग्रह 57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान 119. श्री आतिवाध विधान (सेवाई) 181. विशद वीतराणी संत 58. श्री रत्तावक्षण धर्म विधान 120. नवग्रह शांति विधान 182. काव्य पुञ्ज 60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान 121. सोलह कारण विधान 184. श्री चेंबलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 61. अभितव बृहद् कत्यतह विधान 123. तीर्थंकर विधान 185. विजोलिया तीर्थणूजन आरती चालीसा संग्रह						
56. बृहदू नंदीस्वर महामण्डल विधान 118. दिव्य देसना विधान 180. विशद जिनवाणी संग्रह 57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान 119. श्री आदिताथ विधान (स्वाई) 181. विशद वीतरागी संत 58. श्री दसलक्षण धर्म विधान 120. नवसह शांति विधान 182. काळ पुञ्ज 59. श्री रत्त्तव्य आराधना विधान 121. रक्षा वन्धन विधान 183. पञ्ज जाळ 60. श्री सिद्धचक महामण्डल विधान 122. सोलह कारण विधान 184. श्री चेवलेक्वर का तिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 61. अभितव बृहद् करणतरु विधान 123. तीर्थंकर विधान 185. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह						
57. महामुखुत्रव महामण्डल विधान 119. श्री आदिनाथ विधान (रवाई) 181. विहाद बीतरागी संत 58. श्री दहालक्षण धर्म विधान 120. नवमह शांति विधान 182. काव्य पुञ्ज 59. श्री रत्नत्रव आराधना विधान 121. रहा बन्धन विधान 183. पञ्च जाप्य 60. श्री सिद्धचक महामण्डल विधान 122. सोलह कारण विधान 184. श्री चेंबलेक्स का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 61. अधिनव बृहद कत्यनल विधान 123. तीर्थंकर विधान 185. बिजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह						
 श्री दशलसण प्रमं विधान नकाह शांति विधान श्री स्त्राय आपाधाना विधान रक्षा बन्धन विधान श्री सिद्धन्छ महामण्डत विधान स्था बन्धन विधान श्री सिद्धन्छ महामण्डत विधान स्थान काण्या अभिनत बुहद् कृत्यत्व विधान तीर्थंकर विधान अभिनत बुहद् कृत्यत्व विधान अभिनत बुहद् कृत्यत्व विधान 						
 श्री रत्नत्रय आराधना विधान रक्षा बन्धन विधान श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान सोलह कारण विधान अभिनव बृहद कत्यतह विधान तीर्थकर विधान कि. अभिनव बृहद कत्यतह विधान कि. क्वोलिया तीरपूजन आरती चालीसा संग्रह 						
6). श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान 122. सोलह कारण विधान 184. श्री चैंबलेडबर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह 61. अभिनव बृहद् कल्पतरु विधान 123. तीर्थंकर विधान 185. विजोलिया तीर्थणूजन आसती चालीसा संग्रह						
61. अभिनव बृहद् कत्यतरु विधान 123. तीर्थंकर विधान 185. बिजोलिया तीथपूजन आरती चालीसा संग्रह						
01. 31.11.1 264.11.11.1						
62. बृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान 124. गणधर वलय विधान (लघु) 186. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह						
	62.	वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान	124.	गणधर वलय विधान (लघु)	186.	**

नोट-उपरोक्त विधानों में से आप अधिकाधिक पूजन विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। - मुनि विशालसागर